आसनसोल रेल मंडल / राजभाषा विभाग की ई-पत्रिका

# रेल रश्मि

अंक : 35

जून, 2025

## राजभाषा विषयक महत्त्वपूर्ण गतिविधियाँ (जनवरी,2025 से अबतक)

विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार वितरण समारोह-2024 के अवसर 21 फरवरी 2025 को माननीय महाप्रबंधक/पूर्व रेलवे श्री मिलिंद देउस्कर एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी /पूर्व रेलवे के कर-कमलों से आसनसोल मंडल के लिए राजभाषा चल शील्ड ग्रहण करते मंरेप्र श्री चेतनानंद सिंह व निवर्तमान राधि डॉ.मधुसूदन दत्त

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10.01.2025 को मंरेप्र. श्री चेतनानंद सिंह की अध्यक्षता में मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक। साथ में परिलक्षित अपर मंरेप्र.श्री प्रवीण कुमार प्रेम, उप मुराधि श्री राहुल राज, निवर्तमान राधि डॉ. मधुसूदन दत्त व शाखा अधिकारीगण

# रेल रश्मि

जून,2025

35वाँ अंक

**संरक्षक**
चेतनानंद सिंह
मंडल रेल प्रबंधक

**उप संरक्षक**
प्रवीण कुमार प्रेम
अपर मंडल रेल प्रबंधक

**प्रधान संपादक**
राहुल राज
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं वरि.मंडल सुरक्षा आयुक्त

**संपादक**
पुरुषोत्तम कुमार गुप्ता
वरिष्ठ अनुवादक/राजभाषा विभाग

**सहयोग**
संजय राउत / कनि.अनुवादक
अनिल कु.वर्मा / कनि.अनुवादक
बिजय कु. राजभर/ कनि.अनुवादक

मो. 900202625
(संपादक-सह-वरिष्ठ अनुवादक)
ई.मेल : rajbhashaerasn@gmail.com

## विषय सूची



| पृष्ठ | रचना | लेखक |
|---|---|---|
| 3 | मंडल रेल प्रबंधक की कलम से | चेतनानंद सिंह |
| 4 | अपर मंडल रेल प्रबंधक की कलम से | प्रवीण कुमार प्रेम |
| 5 | उप मुराधि की कलम से | राहुल राज |
| 6-12 | राजभाषा विषयक गतिविधियाँ | संजय राउत |
| 13-15 | भारतीय रेलवे में टिकटिंग ..(आलेख) | कार्तिक सिंह |
| 15-16 | डी.पी.डब्ल्यू.सी.एस. की महत्ता(आलेख | केशव कुमार |
| 17-19 | नारी (नाटक) | राकेश कु.साह |
| 20 | खिड़की (कविता) | राजीव कु० तिवारी |
| 20 | दो कविताएँ (आलेख) | शंकर कु.मिश्रा |
| 21-23 | स्त्री जीवन की कथा(आलेख) | बिजय कुमार राजभर |
| 23-24 | थाने का मुंशी(कहानी) | अनिल कु० वर्मा |
| 25 | आदमी(कविता) | उपेंद्र प्रसाद |
| 26-28 | प्राइवेसी (कहानी) | पुरुषोत्तम कु.गुप्ता |
| 28-29 | हिंदी से डरिए मत,..(आलेख) | राहुल राज |
| 30-31 | जिउतिया : आस्था और ... (आलेख) | संजय राउत |
| 31 | राजभाषा नियम 1976.. (आलेख) | संकलित |
| 32 | ह्वाट्सएप्प (कविता) | कार्तिक सिंह |



**नोट** : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

**आग्रह** : **'रेल रश्मि' के 36वें अंक के लिए अपनी स्वरचित एवं अप्रकाशित रचनाएँ राजभाषा विभाग को उपलब्ध कराएँ ताकि इसके कलेवर में श्रीवृद्धि हो सके।** - संपादक

**ध्यातव्य** : **स्वरचित टंकित रचनाएँ मो.नं. 9430774260 पर ह्वाट्सएप्प की जा सकती हैं। रचना के अंत में कृपया स्वघोषणा करें कि :**

'यह मेरी स्वरचित एवं अप्रकाशित रचना है। '

# संरक्षक की कलम से

प्रिय सुधीजनो!

आसनसोल मंडल की गृह पत्रिका 'रेल रश्मि' के 35वें अंक को बड़े हर्ष के साथ आप लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। यदि इसका आप अवलोकन करेंगे, तो महसूस होगा कि आसनसोल रेल मंडल की सृजनात्मक गतिविधियों का इसमें प्रतिबिंब झलकता है।

आसनसोल मंडल के दूरद्रष्टा अधिकारियों एवं कर्मठ कर्मचारियों की सक्रियता के कारण हमारे मंडल ने अनेक क्षेत्रों में विकास की नयी ऊँचाइयों को छुआ है। क्षेत्रीय स्तर पर इस हेतु आसनसोल रेल मंडल के विभागों, अनेक अधिकारियों एवं कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया है। बड़े हर्ष का विषय रहा कि **21 फरवरी,2025** को बी.सी.राय इंस्टीच्यूट में आयोजित पुरस्कार-वितरण समारोह में पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक और मुख्य राजभाषा अधिकारी के कर-कमलों द्वारा 'राजभाषा चल शील्ड' से हमारे मंडल को सम्मानित किया गया।

राजभाषा विभाग द्वारा मंडल के हिंदी भाषी क्षेत्र के स्टेशनों के अलावे बराकर,अंडाल,चित्तरंजन जैसे हिंदीतर भाषी स्टेशनों के कार्मिकों और उनके बच्चों के लिए भी अनेक सुरुचिपूर्ण और प्रेरक कार्यक्रम आयोजित कराए गए। इन कार्यक्रमों की झलकियों को इस पत्रिका में पर्याप्त स्थान मिला है। मुझे विश्वास है कि इसे देखकर अन्य स्टेशन/डिपो के अधिकारी और कर्मचारी भी प्रेरित एवं प्रोत्साहित होंगे। विशेष अनुरोध है कि अपने सरकारी काम-काज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें ताकि राजभाषा विषयक निर्धारित लक्ष्यों में हमलोग कभी पीछे नहीं रहें।

'रेल रश्मि' आपकी अपनी पत्रिका है। अनुरोध है कि आप अवश्य ही अगले 36वें अंक में प्रकाशन हेतु अपनी स्तरीय रचनाएँ उपलब्ध कराएँ।

मंगलकामनाओं के साथ।

(चेतना नंद सिंह)
मंडल रेल प्रबंधक

# अपर मंडल रेल प्रबंधक की कलम से

सहृदय सुधीजनो!

आसनसोल मंडल की राजभाषा पत्रिका 'रेल रश्मि' के नवीनतम 35वें अंक को ई.पत्रिका के रूप में प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। आसनसोल रेल मंडल की चहुँमुखी विकास-यात्रा के हमलोग सहयात्री रहे हैं। अपने अधिकारियों,वरिष्ठ पर्यवेक्षकों और कर्मचारियों की कर्मठता एवं समर्पण से ही पूर्व रेलवे में अन्य मंडलों की अपेक्षा आसनसोल मंडल हमेशा अग्रणी रहता है।

मंडल की यह पत्रिका अधिकारियों और कर्मचारियों को सुरुचिपूर्ण वतावरण में कुछ रचनात्मक करने का उत्साह भरती है। राजभाषा का यह मंच सकारात्मक सृजनशीलता को प्रेरित करता है।

राजभाषा विभाग मंडल के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके बच्चों को राजभाषा के मंच से जोड़ने में सफल रहा है। इस हेतु उनके द्वारा अनेक प्रकार के प्रेरणामूलक कार्यक्रम, प्रतियोगिताएँ और समारोह आयोजित किए जाते हैं। यह जानकर तो और भी अच्छा लगा कि डीजल शेड, एरिया मैनेजर/अंडाल और मधुपुर एवं जसीडीह में स्वत:प्रेरणा से वहाँ के वरिष्ठ पर्यवेक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर राजभाषा विषयक कार्यक्रम आयोजित कराए गए। राजभाषा हिंदी के प्रति इस प्रकार आयी जागृति में राजभाषा टीम की चेतनागत भूमिका भी रही होगी,ऐसा मेरा विश्वास है। मेरी विशेष अपेक्षा रहेगी कि सरकारी काम-काज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग-प्रसार में भी हमारे अधिकारी व कर्मचारी उत्साहपूर्वक योगदान करें।

आप अधिकारियों और कर्मचारियों से यह विशेष अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंक हेतु अपनी रचनाएँ राजभाषा विभाग को उपलब्ध कराएँ ताकि पत्रिका की श्रीवृद्धि हो।

सुमधुर शुभकामनाओं के साथ।

(प्रवीण कुमार प्रेम)
अपर मंडल रेल प्रबंधक

## उप मुख्य राजभाषा अधिकारी की कलम से

प्रिय पाठको !

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी के रूप में राजभाषा पत्रिका 'रेल रश्मि' के 35वें अंक को आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। राजभाषा विभाग के तत्वावधान में आयोजित होनेवाले प्रोत्साहनमूलक कार्यक्रमों में भाग लेने में मुझे बड़ा आनंद आता है। विभिन्न विभागों के अधिकारियों,कर्मचारियों और बच्चों से मिलने-जुलने का सौभाग्य मिलता है। हाल में टीआरएस/आसनसोल के सभाकक्ष में आयोजित 'महादेवी वर्मा जयंती समारोह' के कार्यक्रमों का मैं साक्षी रहा हूँ। बड़ा अच्छा लगा कि इसके अंतर्गत आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेकर मुझे जितना अच्छा लगा, उतना ही वरिष्ठ मंडल बिजली इंजीनियर/टीआरएस श्री प्रभात कुमार, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार, टीआरएस के श्री आर.एस.सिंह, मेमू के श्री दिनेश कुमार वर्मा और अन्य अधिकारियों को भी अच्छा लगा। विशेषकर कर्मचारियों और उनके बच्चों ने जिस उत्साह के साथ इस समारोह में उल्लास भरा,उसके लिए राजभाषा टीम की ओर से उन्हें साधुवाद।

राजभाषा विषयक इन कार्यक्रमों का मूल उद्देश्य यही रहा है कि मंडल के विभिन्न विभागों के अधिकारियों और कर्मचारियों को एक रचनात्मक मंच पर लाया जाए और राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार हेतु उपयुक्त माहौल बनाया जाए। आपलोगों को जानकर खुशी होगी कि दुमका,दुर्गापुर,डीजल शेड/अंडाल,एरिया मैनेजर कार्यालय/अंडाल,मधुपुर,जसीडीह, सिमुलतला आदि गैर-हिंदीभाषी एवं हिंदीभाषी क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों को भी राजभाषा के प्रेरक कार्यक्रमों से जुड़ने का मौका मिला। स्वत:प्रेरणा से भी राजभाषा विषयक अनेक कार्यक्रमों का आयोजिन हुआ, इसमें वहाँ के अधिकारियों/वरिष्ठ पर्यवेक्षकों और कर्मचारियों बड़ा सराहनीय योगदान रहा है।

आशा है कि राजभाषा विभाग के तत्वावधान में हो या फिर आपलोगों की अंत:प्रेरणा से - आयोजित होनेवाले भावी कार्यक्रमों में आप और आपके साथियों की सहभागिता इसी प्रकार बनी रहेगी।

विशेष अनुरोध है कि पत्रिका के अगामी 36वें अंक के लिए अपनी रचनाएँ यथाशीघ्र राजभाषा विभाग को उपलब्ध कराएँ, ताकि पत्रिका के कलेवर में श्रीवृद्धि हो सके।

(राहुल राज)
वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त

# राजभाषा विषयक विशिष्ट गतिविधियाँ (जनवरी,2025 से अबतक)

*** टीआरएस शेड के सभाकक्ष में महादेवी वर्मा जयती समारोहपूर्वक मनायी गयी (28 मार्च,2025)** : उप मुख्य राजभाषा अधिकारी -सह-वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त श्री राहुल राज सर का आत्मीय नेतृत्व, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार,मंडल बिजली इंजीनियर/टीआरएस/प्रभारी श्री प्रभात सर,मंडल बिजली इंजीनियर/टीआरएस श्री रवि शंकर सिंह,मंडल बिजली इंजीनियर/टीआरएस/मेमू श्री दिनेश कुमार वर्मा, सहायक बिजली इंजीनियर/टीआरएस श्री अतनु विश्वास,सहायक सामग्री प्रबंधक/टीआरएस श्री चुनचुन कुमार और वहां के वरिष्ठ पर्यवेक्षकों की सक्रिय सहभागिता से महादेवी वर्मा जयंती समारोह'बड़े सकारात्मक वातावरण में संपन्न हुआ। राजभाषा कार्यान्वयन समिति के संयोजक श्री मनीष कुमार एवं अंशकालिक पुस्तकाध्यक्ष श्री केशव कुमार की सक्रियता से इस समारोह में कार्मिकों और उनके बच्चों की भागीदारी बढ़ी। सिगनल/टेली विभाग के पर्यवेक्षकों द्वारा उपलब्ध कराए गये इलेक्ट्रॉनिक उपस्करों ने इस समारोह को उत्कृष्ट और रंगारंग बनाने में योगदान दिया। राजभाषा टीम के श्री संजय जी की रचनात्मक सोच और कल्पनाशीलता ने इस समारोह के बैनर की अनोखी रूपरेखा तैयार की। श्री विजय एवं संजय की कर्मठता से पुरस्कार वितरण हेतु पुस्तकों की आपूर्ति सुनिश्चित हुई। अनिल जी की तत्परता ने भी इस समारोह को गतिशील बनाए रखा। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कार्मिकों की उल्लासपूर्ण भागीदारी ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई और सबसे बड़ी खुशी तो बच्चों की प्यारी -प्यारी -मीठी-मीठी प्रस्तुतियों ने दिलायी। बहरहाल, महादेवी वर्मा की जयंती समारोह की यह संध्या सुरमई थी।

टीआरएस/आसनसोल में आयोजित 'महादेवी वर्मा जयंती समारोह' का विहंगम दृश्य। कार्यालय अधीक्षक श्रीमती शुभ्रा दत्त एवं लिपिक श्रीमती देवांजली दाँ सरस्वती वंदना प्रस्तुत करते हुए।

काव्य-प्रस्तुत करते टीआरएस/आसनसोल के कार्मिकों के बच्चे

हिंदी की सर्वाधिक लोकप्रिय कवयित्री महादेवी वर्मा जयंती समारोह की अध्यक्षता करते वरि.मं.वि.इंजी./टीआरएस श्री प्रभात कुमार। स्वागत संबोधन प्रस्तुत करते उप मुराधि-सह-वरि.मं.सु.आयुक्त श्री राहुल राज। मुख्य अतिथि वरि.मंडल परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार, मं.वि.इंजी./मेमू श्री दिनेश कु.वर्मा एवं टीआरएस कार्यालय के अधिकारी/कार्मिक गण।

मंडल स्तरीय हिंदी पुस्तक समीक्षा के सफल प्रतिभागी(प्रथम स्थान प्राप्त)श्री राजीव कुमार तिवारी/मु.गाड़ी लिपिक/जसीडीह को पुरस्कृत करते वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार।

मंडल स्तरीय हिंदी पुस्तक समीक्षा के सफल प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते मंडल वि.इंजी./मेमू श्री दिनेश कुमार वर्मा। उत्साहवर्द्धन करते वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार, उप मुराधि-सह-व.मं.सु.आ.श्री राहुल राज व व.मं.वि.इंजी./टीआरएस श्री प्रभात कुमार।

काव्य-पाठ प्रतियागिता में सफल बच्ची को पुरस्कृत करते मं.वि.इंजी./दिनेश कु.वर्मा. उत्साहवर्द्धन करते वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री राजेश कुमार, उप मुराधि-सह-व.मं.सु.आ.श्री राहुल राज व व.मं.वि.इंजी./टीआरएस श्री प्रभात कुमार।

काव्य प्राठ प्रस्तुत करती टीआरएस कर्मी की बच्ची

**डीजल शेड/अंडाल में भी महादेवी वर्मा जयंती धूमधाम से मनायी गयी :** वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर/डीजल श्री सचेंद्र गोस्वामी और डीजल शेड/अंडाल टीम की नैसर्गिक सक्रियता से महादेवी वर्मा की जयंती को उत्कृष्ट ढंग मनाया गया। राजभाषा विषयक स्वत: प्रेरित ऐसे प्रयास रेलवे के अन्य  यूनिटों के लिए अनुकरणीय होने चाहिए। राजभाषा टीम की ओर से हार्दिक बधाइयां और साधुवाद!!

अज्ञेय जयंती अनोखे अंदाज में एरिया मैनेजर कार्यालय/ अंडाल में मनायी गयी।

**मंडल के विभिन्न स्टेशनों/शेडों में राजभाषा विषयक अनेक सुरुचिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित हुए :** राजभाषा विभाग के प्रेरणादायक आह्वान के अंतर्गत मंडल के प्रमुख स्टेशनों में वहाँ के वरिष्ठ पर्यवेक्षकों एवं कार्मिों की स्वत: प्रेरणा से अनेक सुरुचिपूर्ण कार्यक्रम आयोजित किए गए। ऐसे कार्यक्रमों विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10 जनवरी,2025 अंडाल और मधुपुर साहित्यिक परिचर्चा व बच्चों की काव्य-पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गयीं। अज्ञेय जयंती बड़े रोचक और अनोखे अंदाज में एरिया मैनेजर कार्यालय/अंडाल में मनायी गयी। फणीश्वरनाथ रेणु की जयंती मधुपुर और जसीडीह में मनायी गयी। गौरा पंत अर्थात शिवानी की स्मृति में दुमका में साहित्यिक परिचर्चा हुई तो निराला की जयंती जसीडीह के हिंदी पुस्तकालय में मनायी गयी। महान स्वतंत्रता सेनानी नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती सिमुलतला में बड़े धूमधाम से मनायी गयी। उक्त कार्यक्रमों की कुछ झाकियाँ ऊपर और नीचे दर्शायी गयी हैं।

शिवानी की स्मृति में दुमका में साहित्यिक परिचर्चा हुई।

## बच्चों के बीच कविता पाठ व प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन

**मधुपुर (निसं)।** विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में सहायक मंडल अभियंता कार्यालय ,मधुपुर के फणीश्वर नाथ रेणु हिंदी पुस्तकालय में रेल कर्मचारियों के बच्चों के बीच कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।साथ ही कर्मचारियों के बीच हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने हेतु रवि शेखर यातायात निरीक्षक की अध्यक्षता एक सभा भी आयोजित की गई। जिसमें स्टेशन प्रबंधक एसके पाठक मधुपुर ,स्वास्थ्य निरीक्षक कुमार अभिमन्यु, एसएसई टीआरडी मधुपुर, सुजीत कुमार कार्यालय अधीक्षक, अखिलेश कुमार हिंदी संयोजक, गौतम कुमार वरिष्ठ लिपिक, मृत्युंजय कुमार द्विवेदी, सोहन कुमार मंडल, दीपक दास, भुवनेश्वर कुमार, महबूब अली कार्यालय अधीक्षक, सुमन सिंह सीनियर नर्सिंग अधीक्षक, एवं अन्य रेलवे कर्मी उपस्थित थे। क्विज प्रतियोगिता में कविता पाठ एवं प्रश्नोत्तरी के प्रश्नों का उत्तर सही देने पर बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

## सिमुलतला स्टेशन पर राजभाषा क्रियान्वयन समिति की बैठक

संसू,जागरण, जमुई: संविधान की आठवीं अनुसूची में जिस भाषा को कोई स्थान नहीं मिला, उस भाषा को हम सभी बोलकर और लिखकर खुद को गौरांवित महसूस कर रहें है। उपरोक्त बातें गुरुवार को आसनसोल रेल मंडल के राजभाषा अधिकारी मधुसूदन दत्त ने सिमुलतला रेलवे स्टेशन में आयोजित राजभाषा क्रियान्वयन समिति की तिमाही बैठक के दौरान कही। कार्यक्रम का विधिवंत शुभारंभ नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के अवसर पर उसके छाया चित्र पर माल्यार्पणं के साथ हुआ। इस दौरान देश आजादी में उनकी कृतियों को याद किया गया। रेलकर्मियों से कहा कि आप अपना कार्य हिंदी में करें। किसी प्रकार की असुविधा होने पर उसका समाधान किया जाएगा। अगर आप हिंदी में कार्य करते हैं तो विभाग के द्वारा आपको सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्टेशन प्रबंधक अखिलेश कुमार ने करते हुए कहा अपनी भाषा में जो मजा है। वह कहां दूसरी भाषा में है।हमें अपने भाषा में काम करने से गर्भ महसूस होता है। कार्यक्रम के संयोजक सह लहाबन स्टेशन प्रबंधक डीएन कामती ने उत्साहित भाव से कहा हिंदी राष्ट्र की बिंदी है। कार्यक्रम के दौरान सिमुलतला आरपीएफ ओपी अध्यक्ष रविकुमार, बुकिंग सुपरभाइजर गौतम प्रसाद आदि ने भी अपने संबोधन के माध्यम से कार्यालय कार्य में हिंदी की महत्वता पर प्रकाश डाला एवं होने वाली परेशानियों को रखा। इस अवसर पर राजभाषा प्रतिनिधि पुरुषोत्तम कुमार, विवेकराज, तुलसी यादव, अजीत कुमार, गोविंद यादव, स्नेही जी, बलराम सिंह आदि उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान नेताजी सुभाष चंद्र बोस के छायाचित्र पर माल्यार्पण करते अधिकारी

फणीश्वरनाथ रेणु जयंती (बच्चन हिंदी पुस्तकालय/जसीडीह)

रेलकर्मियों ने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की जयंती मनायी

जसीडीह/संवाददाता।

जसीडीह स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक स्थित डॉ हरिवंश राय बच्चन पुस्तकालय परिसर में शुक्रवार को रेल पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की जयंती मनाकर याद किया। इस अवसर पर जसीडीह स्टेशन प्रबंधक सह स्टेशन राजभाषा अध्यक्ष शंकर शैलेश, पुस्तकालय अध्यक्ष अखिलेश कुमार, स्टेशन राजभाषा संयोजक शंकर कुमार केशरी, मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक धीरेन्द्र गोप, बैद्यनाथधाम स्टेशन प्रबंधक माधव चंद्र झा, मुख्य गाड़ी लिपिक राजीव कुमार तिवारी आदि ने कवि निराला की तस्वीर पर फूल माला पहनाकर श्रद्धा सुमन अर्पित की। साथ रेल पदाधिकारियों ने सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की चर्चा कर उनकी जीवनी पर विस्तार से प्रकाश डाले। कार्यक्रम का संचालन शंकर कुमार केशरी ने की। जबकि अंत में धन्यवाद ज्ञापन अखिलेश कुमार ने किया। इस अवसर पर संतोष कुमार, चंदन कुमार, अनिल मरीक, शिवशंकर कुमार, जितेन्द्र कुमार, गौरव कुमार, गोपाल दास, केके मांजी, बाबूलाल मांझी आदि रेल कर्मी उपस्थित थे।

**मंडल के प्रमुख शेड/स्टेशनों पर गठित राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की तिमाही बैठक यथानुसार संपन्न :** दुर्गापुर,आसनसोल स्टेशन,पानागढ़,अंडाल,टीआरएस/आसनसोल,मंडल अस्पताल,सीतारामपुर,बराकर,चित्तरंजन,मधुपुर,जसीडीह,सिमुलतला और दुमका में राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ गठित हैं। इसके अतिरिक्त मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक मंडल रेल प्रबंधक श्री चेतनानंद सिंह की अध्यक्षता में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10जनवरी,2025 को संपन्न हुई। इन बैठकों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार की समीक्षा होती है और समिति सदस्यों से महत्वपूर्ण सुझाव आमंत्रित किए जाते हैं। विगत/चालू तिमाहियों में आयोजित विभिन्न कार्यान्वयन समितियों की बैठकों की झलकियाँ प्रस्तुत हैं :

**मंडल राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक (10.01.2025)**

चित्तरंजन की बैठक

सिमुलतला की बैठक के दौरान राजभाषा प्रदर्शनी भी लगायी गयी थी।

टीआरएस की बैठक

सीतारामपुर की बैठक

दुर्गापुर की बैठक

पानागढ़ की बैठक

बराकर की बैठक

मधुपुर की बैठक के दौरान काव्य-पाठ प्रतियोगिता में सफल बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।

दुमका की बैठक

जसीडीह की बैठक

**विश्वभारती/शांतिनिकेतन में राजभाषा विषयक विशिष्ट कार्यशाला में भागीदारी :** विश्वभारती/शांतिनिकेतन के राजभाषा विभाग/गृहमंत्रालय एवं हिंदी भवन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 'हिंदी कार्यशाला' में अतिथि वक्ता के रूप में आसनसोल के राजभाषा अधिकारी डॉ. मधुसूदन दत्त और वरिष्ठ अनुवादक श्री पुरुषोत्तम कुमार गुप्ता को आमंत्रित किया गया था। इसमें हिंदी भवन के विभागाध्यक्ष डॉ. सुभाष चद्र राय, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. मुक्तेश्वर तिवारी आदि की अहम् भूमिका थी।

**मंडल के विभिन्न विभागों के राजभाषा विषयक जाँच अधिकारी एवं प्रभारियों की कार्यशाला :** दिनांक 13.02.2025 को चाणक्य सभाकक्ष में जाँच बिंदु अधिकारी एवं प्रभारियों के लिए हिंदी कार्यशाला एवं बैठक संपन्न कराई गई। ऐसे विभिन्न उपायों की जानकारी दी गई, जिसकी सहायता से कार्यालयी कार्यों को सहजतापूर्वक हिंदी में किया जा सकता है और हिंदी कार्यों को बढ़ाया जा सकता है। इस बैठक में मंडल कार्यालय विभिन्न विभागों के 07 जाँच बिंदु अधिकारी एवं 17 प्रभारियों ने भाग लिया।

**राजभाषा विभाग द्वारा न्यू कॉप्लेक्स/समाडि/आसनसोल में प्रशिक्षण दिया गया :** दिनांक 07.02.2025 को न्यू कॉम्प्लेक्स/आसनसोल में पदोन्नति परीक्षा हेतु नामित 24 कार्मिकों को राजभाषा विषयक प्रशिक्षण दिया गया।

**डॉ. मधुसूदन दत्त: आसनसोल मंडल के राजभाषा विभाग के अनिवार्य अंग बन गये थे :** हमारे सर्वप्रिय राजभाषा अधिकारी डॉ. मधुसूदन दत्त ने प्रशासनिक नीति के तहत प्रधान कार्यालय/पूर्व रेलवे के राजभाषा अधिकारी के रूप में 28फरवरी,2025 को कार्यभार ग्रहण कर लिया। आसनसोल मंडल के राजभाषा अधिकारी के रूप में आपने 05.03.2019 को पदभार ग्रहण किया था। उनके नेतृत्व में राजभाषा टीम ने अनेक स्वर्णिम अध्याय जोड़े। मंडल के प्रत्येक कोने में राजभाषा विषयक गतिविधियों एवं कार्यक्रमों की धूम मच गयी। वे समान भाव से सबके बीच लोकप्रिय रहे। उनकी सदाशयता हमें सदैव प्रेरित करती रहेगी।

## भारतीय रेलवे में टिकटिंग का डिजिटलीकरण (आलेख)

: कार्तिक सिंह
उप मुख्य वाणिज्य प्रबंधक (डी बी )
पूर्व रेलवे, कोलकाता

भारतीय रेलवे में टिकटिंग का डिजिटलीकरण एक परिवर्तनकारी यात्रा रहा है, जिसका उद्देश्य यात्री सुविधा को बढ़ाना, परिचालन दक्षता में सुधार करना और दुनिया के सबसे बड़े रेल नेटवर्क में से एक को आधुनिक बनाना है। वर्षों से, भारतीय रेलवे ने टिकटिंग प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने, भौतिक टिकटों पर निर्भरता को कम करने और लाखों यात्रियों के लिए एक सहज अनुभव प्रदान करने के लिए विभिन्न डिजिटल तकनीकों और प्लेटफॉर्म्स को अपनाया है। नीचे भारतीय रेलवे में टिकटिंग के डिजिटलीकरण का विवरण दिया गया है:

### डिजिटलीकरण के प्रमुख मील के पत्थर :

भारतीय रेलवे में टिकटिंग का डिजिटलीकरण कई प्रमुख मील के पत्थरों के माध्यम से विकसित हुआ है :

**ऑनलाइन बुकिंग की शुरुआत (2002)**: भारतीय रेलवे खानपान और पर्यटन निगम (IRCTC) ने अपना ऑनलाइन बुकिंग प्लेटफॉर्म लॉन्च किया, जिससे यात्री इंटरनेट के माध्यम से टिकट बुक कर सकते थे।

**ई-टिकटिंग (2005)**: IRCTC ने इलेक्ट्रॉनिक टिकट (ई-टिकट) पेश किए, जिससे यात्री घर से टिकट बुक और प्रिंट कर सकते थे।

**मोबाइल टिकटिंग (2014)**: IRCTC रेल कनेक्ट ऐप लॉन्च किया गया, जिससे स्मार्टफोन के माध्यम से टिकट बुकिंग और प्रबंधन संभव हुआ।

**पेपरलेस टिकटिंग (2016)**: भारतीय रेलवे ने QR कोड-आधारित पेपरलेस टिकट पेश किए, जिससे भौतिक टिकटों की आवश्यकता कम हो गई।

**अनारक्षित टिकटों के लिए UTS ऐप (2016)**: अनारक्षित टिकटिंग सिस्टम (UTS) ऐप लॉन्च किया गया, जिससे अनारक्षित और उपनगरीय ट्रेन टिकट बुक किए जा सकते हैं।

**डिजिटल भुगतान एकीकरण**: सहज लेनदेन के लिए UPI, वॉलेट और नेट बैंकिंग सहित कई भुगतान विकल्पों को एकीकृत किया गया।

### डिजिटल टिकटिंग प्लेटफॉर्म

भारतीय रेलवे ने टिकटिंग को सुविधाजनक बनाने के लिए विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित और एकीकृत किए हैं :

**IRCTC वेबसाइट**: आरक्षित टिकट बुक करने, PNR स्थिति जांचने और आरक्षण प्रबंधित करने के लिए आधिकारिक डिजिटल प्लेटफॉर्म है। बहुपयोगी इस ऐप द्वारा रेलवे के ई.पाससधारी रेलकर्मी भी टिकटिंग सुविधा का लाभ ले सकते हैं।

**IRCTC रेल कनेक्ट ऐप**: आरक्षित टिकट बुकिंग, कैंसिलेशन और लाइव ट्रेन ट्रैकिंग के लिए एक मोबाइल ऐप।

**UTS ऐप**: अनारक्षित और उपनगरीय ट्रेन टिकटों के लिए डिज़ाइन किया गया, जिससे यात्री चलते-फिरते टिकट बुक कर सकते हैं।

**अधिकृत पार्टनर प्लेटफॉर्म**: MakeMyTrip, Cleartrip और Paytm जैसी निजी वेबसाइट और ऐप भी रेलवे टिकट बुकिंग सेवाएं प्रदान करते हैं।

### सेल्फ-सर्विस कियोस्क :

रेलवे स्टेशनों पर ऑटोमेटेड टिकट वेंडिंग मशीन (ATVM) त्वरित और आसान टिकट खरीद के लिए उपलब्ध हैं। यह एक टच स्क्रीन कियोस्क है जो यात्रियों को रेलवे स्टेशनों पर लंबी लाइनों में इंतजार किए बिना टिकट खरीदने की सुविधा देता है।प्रमुख स्टेशनों पर एटीवीएम लगाई गईं, जिससे यात्री लंबी कतारों में खड़े हुए बिना टिकट बुक कर सकते हैं ।

## <u>स्वरेल सुपर ऐप:</u>

भारतीय रेलवे ने टिकट बुकिंग, ट्रेन ट्रैकिंग और रेलवे सेवाओं के लिए एकीकृत डिजिटल समाधान, **'स्वरेल सुपर ऐप'** लॉन्च किया है, जो उन्नत सुरक्षा और एआई-संचालित सुविधाओं के साथ उपयोगकर्ता की सुविधा को बढ़ाता है।

इससे आवश्यक रेलवे सेवाओं को एकल, उपयोगकर्ता-अनुकूल प्लेटफ़ॉर्म में केंद्रीकृत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। रेलवे सूचना प्रणाली केंद्र (CRIS) द्वारा विकसित यह ऐप भारत के डिजिटल परिवर्तन और निर्बाध यात्रा प्रबंधन के प्रयासों का का एक कारगर नतीजा है।

यात्री ऐप के ज़रिए आसानी से आरक्षित और अनारक्षित टिकट बुक कर सकते हैं, प्लेटफ़ॉर्म टिकट एक्सेस कर सकते हैं और सीज़न टिकट मैनेज कर सकते हैं । यह सिस्टम वास्तविक समय में पीएनआर स्टेटस ट्रैकिंग, सीट उपलब्धता जांच और ट्रेन शेड्यूल पूछताछ की सुविधा भी देता है , जिससे यात्रियों का अनुभव बेहतर होगा ।

यह ऐप टिकटिंग से आगे बढ़कर पार्सल और माल ढुलाई की ट्रैकिंग, भोजन के ऑर्डर के लिए IRCTC ई-कैटरिंग और शिकायत समाधान के लिए **'रेल मदद'** जैसी सुविधाएँ भी प्रदान करता है। इन सेवाओं को एकीकृत करके, यह प्लेटफ़ॉर्म रेलवे से संबंधित संचालन को सरल बनाता है।

## <u>डिजिटल टिकटिंग की विशेषताएं:</u>

- रियल-टाइम उपलब्धता: यात्री वास्तविक समय में सीट उपलब्धता की जांच कर सकते हैं।
- PNR स्थिति ट्रैकिंग: 10-अंकीय PNR नंबर यात्रियों को अपनी टिकट स्थिति ट्रैक करने की अनुमति देता है।
- ई-टिकट और आई-टिकट: ई-टिकट स्व-मुद्रित होते हैं, जबकि आई-टिकट डाक द्वारा भेजे जाते हैं।
- पेपरलेस यात्रा: QR कोड-आधारित टिकट भौतिक टिकटों की आवश्यकता को समाप्त करते हैं।

**भुगतान विधियां:**

भारतीय रेलवे ने टिकट बुकिंग के लिए कई डिजिटल भुगतान विकल्पों को एकीकृत किया है:
जैसे-क्रेडिट/डेबिट कार्ड,नेट बैंकिंग,यू पी आई,मोबाइल वॉलेट इत्यादि I इसके अलावे टिकट काउंटर पर नकद भुगतान की सुविधा तो है ही।

**डिजिटलीकरण के लाभ:**

- यात्री बिना लंबी कतारों में खड़े हुए कभी भी, कहीं भी टिकट बुक कर सकते हैं ।
- सीट उपलब्धता, पी.एन.आर. स्थिति और ट्रेन शेड्यूल की रियल-टाइम जानकारी।
- छूट और डायनामिक प्राइसिंग विकल्प।
- कागज इस्तेमाल को कम कर पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देता है।

भारतीय रेलवे में टिकटिंग का डिजिटलीकरण ने यात्रियों के टिकट बुक और प्रबंधित करने के तरीके में क्रांति ला दी है। प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर, भारतीय रेलवे ने सुविधा, दक्षता और पहुंच में उल्लेखनीय प्रगति की है। जैसे-जैसे यह प्रणाली विकसित होती जा रही है, यह देश भर के लाखों यात्रियों के लिए और भी अधिक सहज और उपयोगकर्ता-अनुकूल अनुभव प्रदान करने का वादा करती है। भारतीय रेलवे में टिकटिंग प्रणाली मैन्युअल प्रक्रियाओं से लेकर उन्नत डिजिटल समाधानों तक का लंबा सफर तय कर चुकी है, जिससे यह प्रतिदिन लाखों यात्रियों के लिए अधिक सुविधाजनक और कुशल बन गई है।

*****************************************************

## विद्युत लोको में डिस्ट्रिब्यूटेड पावर वायरलेस कंट्रोल सिस्टम (डी०पी०डब्लू०सी०एस०) की महत्ता।

**आलेख**

- केशव कुमार
तकनीशियन
टीआरएस/आसनसोल

डी०पी०डब्लू०सी०एस०, ट्रेन के अलग-अलग जगह पर दिए गए लोको को आपस में जोड़ने की विधि है जिसमें रेडियो फ्रीक्केंसी के द्वारा कनेक्टिविटी/कम्युनिकेशन किया जाता है, अर्थात् सामान्य ट्रेन में ट्रैक्शन लोको हमेशा शुरू में लगाया जाता है, जबकि डीपी इनेबल ट्रेन में ट्रैक्शन लोको को ट्रेन में कहीं भी लगाया जा सकता है. इस सिस्टम के जरिये कई वैगन को बिना तार के रेडियो लिंक से जोड़ा जाता है. वितरित शक्ति (डिस्ट्रिब्युटेड पावर), एक ट्रेन की लम्बाई के दौरान मध्यवर्ती बिंदुओं पर इंजनों के फिजिकल डिस्ट्रिब्यूशन को कहा जाता है। डिस्ट्रिब्यूटेड पावर की अवधारणा को लम्बी ट्रेनों को संचालित करने के लिए विकसित किया गया है, जहाँ परिचालन की दृष्टि से और किफायती रूप से यह बहुत उपयोगी साबित हुआ है। डिस्ट्रिब्युटेड पावर ट्रेन की लम्बाई में फैले लोकोमोटिव का उपयोग कर्षण और ब्रेकिंग में लीड लोकोमोटिव की सहायता के लिए करता है और इस प्रकार युग्मक बलों को कम करते हुए तेजी से कर्षण और तेज ब्रेकिंग प्रदान करता है। डी०पी०डब्लयु०सी०एस० के माध्यम से 4 लोको को ट्रेन के अंत में या उसके बीच में जोड़ा जा सकता है।

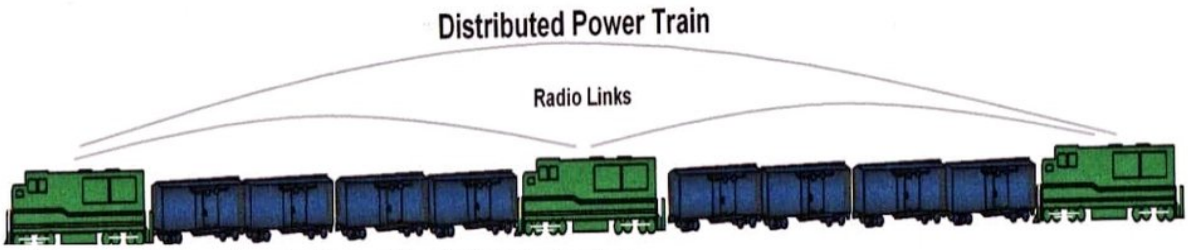


Multiple operations of locomotives with wireless technology.

परंपरागत और डी०पी० युक्त लोको में अंतर :-

कन्वेंशनल ट्रेन- इसमें ट्रैक्टिव फोर्स ट्रेन के सामने से लगता है।

डिस्ट्रिब्यूटेड पावर युक्त ट्रेन के साथ लोकोमोटिव ट्रेन में कहीं भी हो सकता है क्योंकि सभी लोकोमोटिव लिंक पर सिंक्रनाइज होते हैं और इसमें पुश-पुल ऑपरेशन सुचारू और प्रभावी रूप से कर सकता है।
पारंपरिक विन्यास :- भारतीय रेलवे में परम्परागत रूप से माल ढुलाई की क्षमता बढ़ाने के लिए निम्न विन्यास को बढ़ाने के लिए आवश्यकता होती थी :
उच्च युग्मक बल : युआईसी ब्रेकिंग के मामले में ट्रेन की लंबाई 58 वैगन तक सीमित रहती है।
ट्रैक पर प्रभावी स्थानीयकृत बल, उच्च ड्राफ्ट/बुफ्फ फोर्स आदि।

**डीपी युक्त लोको विन्यास के लाभ :-**

- समान डिस्ट्रीब्यूशन के कारण उपलब्ध उच्च ट्रेक्टिव एफर्ट।
- कम युग्मक बल।
- कर्व में पहिए और रेल के बीच लेटरल फोर्स के कम होने के कारण घिसाव कम होता है।

**भारतीय रेलवे की जरूरत के अनुसार डी०पी०डब्लयु सी०एस० प्रणाली निम्नलिखित आवश्यकताओं को पूरा करती है**:-

- यह प्रणाली 1.5 किमी में डी० पी० डब्ल्यु० सी० एस० से कुशलतापूर्वक और संचार में हानि/ हस्तक्षेप के बिना कई ट्रेनों को संचालित करने में सक्षम है।
- रिमोट लोको में लीडिंग चालक के सभी कार्यों का अनुकूलन संभव होता है।
- रिमोट लोकोमोटिव आगे वाले पॉवर के सिग्नल के अनुसार ट्रैक्शन और ब्रेकिंग (इलेक्ट्रिक और न्यूमेटिक) में लीडिंग लोको की सहायता और उसका अनुसरण है।
- ट्रेन ब्रेक का एप्लीकेशन और रिलीज का फीडबैक लीड लोको में मिलता है।
- दोषपूर्ण लोको को अलग करने के लिए लीड लोकों में सिस्टम उपलब्ध है।
- ट्रेन पार्टिंग के समय रिमोट लोकों में ट्रैक्शन शून्य होना और ट्रेन में ब्रेक एप्लीकेशन होना सुनिश्चित होता है।
- लोअर ड्राफ्ट/बफ फोर्स के साथ संचालन होता है।
- लॉग ट्रेन में एप्लीकेशन के लिए बाद ब्रेक पाईप की फास्ट चार्जिंग होती है।
- विभिन्न पॉइंट से बीपी ड्राप करने पर ट्रेन में तेजी से ब्रेक एप्लीकेशन होता है।
- विभिन्न पॉइंट से बीपी चार्ज होने पर ट्रेन में तेजी से ब्रेक रिलीज होता है।
- लीड/बैंकिंग कॉन्फिगरेशन में शटिंग के काम और समय की बचत होती है।
- तेजी के साथ त्वरण या मंदन (एसी/डीसी) संभव है।
- एनर्जी की खपत में कमी।
- वैगन का अधिकतम उपयोग संभव हो पाता है।

*********

नाटक

# नारी

- राकेश कुमार साह
सहायक
बॉक्स एन डिपो/अंडाल

(नेपथ्य से)

मानव समाज की बुनियाद है नारी,
चाहे कहो उसे दुर्गा, काली।
माँ, बहन और पत्नी बनकर,
करती है वो घर की रखवाली ।

(नाटक एक परिवार पर केंद्रित है। घर के मुखिया की मनसिकता है कि परिवार के वंश को चलाने के लिए एक लड़के का होना अनिवार्य है। उसके बेटे का संतान होने वाला है)

**पात्र-परिचय**

1) बैजू मुखिया- पिता जी
2) अशोक - बैजू मुखिया का बड़ा बेटा
3) राकेश - बैजू मुखिया का छोटा बेटा
4) पुष्पा- राकेश की पत्नी
5) पंडी जी - मंदिर का पंडित
6) रोहन और
7) सुनीता - वो पति पत्नी जिनके संतान नहीं होते है।

(प्रथम दृश्य)

रोहन और सुनीता मंदिर में भगवान के सामने प्रार्थना करते हैं

सुनीता - हे परमात्मा सब की गोद भरते हो। हमारी भी लाज रख लो। मुझे भी मां बनने का सौभाग्य दे।
रोहन - हां भाग्यवान, परमात्मा अपनी जरूर सुनेगे।
पंडित जी - बिल्कुल बेटा, परमात्मा सब की गोद भरते हैं। आपकी भी सुनेंगे राधे राधे!
रोहन - पंडित जी कल हमारे घर पर हमने सत्यनारायण भगवान की पूजा रखी है, और यह पूजा आपको ही करवानी है। जो भी पूजा सामग्री का प्रबंध करना है, बता दीजिएगा। राधे राधे !

(दोनों वहां से चले जाते है)

दूसरा दृश्य

बैजू के यहां राकेश को बिटिया पैदा होती है (बैकग्राउंड ओ री चिरैया)

राकेश - तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद पुष्पा, तुमने मुझे पिता बनने का सौभाग्य दिया।
पुष्पा - अजी, इसमें धन्यवाद की कौन सी बात है। यह तो आपका हक है। परंतु पिताजी का क्या!
राकेश - अरे पिताजी खुश हो जाएंगे, जब इस बच्ची को गले से लगाएंगे। आखिरकार वह भी तो दादा बन गए।

(बैजू मुखिया और उसके बड़े बेटे अशोक का प्रवेश)

राकेश – बधाई हो पिताजी! आप दादा बन गए।
बैजू– सुना अशोक मैं दादा बन गया। तुम बड़े पापा बन गए। अब हमारे वंश को चलाने वाला आ गया है।
राकेश– यह लीजिए अपने अंश को पिता जी! आपकी गोद में जाकर यह बहुत खुशी महसूस करेगी।
अशोक– करेगी ? करेगी का क्या मतलब। बेटा ही है ना
राकेश– बेटा और बेटी में क्या अंतर है? हम लोग भी तो एक मां के कोख से ही पैदा हुए हैं ना भैया? अपनी मां भी तो किसी की बेटी रही होगी।

अशोक –इसका मतलब बेटी ही है पिता जी।

बैजू –अरे बाप रे बाप! यह तो अनर्थ हो गया। तुमने मुझे झांसा में रखा कि तुम्हारी पत्नी के कोख में हमारे वंश का वारिश पल रहा है।

पुष्पा –पिताजी! यह तो परमात्मा का आशीर्वाद है कि हमारे घर लक्ष्मी पैदा हुई है।

बैजू –तुम मुझे ज्ञान मत दो। इसे मेरे नजरों से दूर करो वरना मेरे हाथों कुछ अनर्थ हो जाएगा। अशोक इसे ले जाओ यहां से।

राकेश –पिताजी ऐसा ना करें। यह हमारा अंश है।

(बैजू राकेश को पकड़ लेता है... अशोक बच्ची को छीन लेता है और लेकर कहीं चला जाता है, सड़क पर उसे छोड़ आता है,वहीं से पंडित जी गुजरते होते हैं बच्चों को रखते हुए देखकर रुक जाते हैं)

## तीसरा दृश्य

पंडित जी –अरे रुको.....अशोक! यह इस बच्चे को यहां इस सुनसान सड़क पर क्यों छोड़ गया। यह तो बैजू का बड़ा बेटा अशोक था, कल ही इसके छोटे भाई की एक बिटिया हुई है। कहीं ये वही बच्ची तो नहीं । हे प्रभु कोई एक संतान के लिए तरसता है और जिसको आपने दिया, उसे इसकी कदर नहीं। क्यों ना इस बच्ची को रोहन और सुनीता को दे दूं। उन्हें एक बच्चा मिल जाएगा और इस बच्चे को मां-बाप। इसे पाकर वो लोग बहुत खुश हो जाएंगे । शायद नियति को यही मंजूर हो।

(पंडित जी बच्चे को लेकर रोहन और सुनीता के घर पहुंचते है और उन्हें पूरी घटना से अवगत करवाते हैं)

पंडीजी –बस यही समझो बेटा, ये प्रभु का आशीर्वाद है - आप दोनों के लिए। इसे खूब लाड़- प्यार से पालना।

(सुनीता और रोहन बच्चों को गोद में लेकर फूलों नहीं समाते हैं)

पंडित जी –मैं चलता हूं मेरी पूजा का समय हो गया।

(पंडित जी चले जाते हैं)

सुनीता –हे ईश्वर! आपने मेरी गोद भर दिया, आपने मुझे जीवन का सबसे बड़ा उपहार दे दिया।

रोहन –इसे हम खूब पढ़ाएंगे और एक दिन एक काबिल नागरिक बनाएंगे। अब अपना परिवार संपूर्ण हुआ सुनीता।

(बैकग्राउंड से, 25 वर्ष बीत चुके हैं। बैजू एक गंभीर लाइलाज बीमारी के कारण बीमार है, इलाज करके थक चुका है। परंतु उसके स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हो पा रहा है। एक दिन पंडित जी उनके घर आते हैं)

## चौथा दृश्य

(बैजू बीमारी के कारण लेटा हुआ है। उसके चारों तरफ दोनों बेटे और उनकी पुत्र वधू दवा-दारू में लगी हुई है।)

पंडित जी– बैजू कैसी है तुम्हारी तबीयत।

बैजू – कहां पंडित जी, न जाने किस कर्म की सजा मुझे मिल रही है, एक तो मैंने अपने पुत्र अशोक को खो दिया। डॉक्टर दिखा दिखा कर मैं थक चुका हूं, परंतु लगता है अब मुझे परमात्मा बुला रहे है।

पंडित जी - सच कहा बैजू सभी कर्मों की सजा हमें यही मिलती है। तुमने भी जरूर कुछ ऐसे पाप किए होंगे , खैर अब छोड़ो उन बातों को, एक डॉक्टर मेरे नजर में है। तुम कहो तो उन्हें बुलाऊं। शायद उनकी दवा से तुम ठीक हो जाओ.

राकेश –बड़ा उपकार होगा पंडित जी । आपका अगर मेरे पिताजी ठीक हो पाए।

पंडित जी– ठीक है मैं उन्हें लेकर आता हूं। आज वह हमारे बगल में किसी को देखने आए हुए हैं

(पंडित जी एक डॉक्टर मैडम को लेकर आते हैं)

डॉक्टर मैडम –उनके पुराने सारे दवा के कागज दीजिए। (सभी दवा और कागज को देखने के बाद) बाबा चिंता ना करें अब आप बहुत जल्द ठीक हो जाएंगे। इन सारी दवाओं को छोड़कर बस यह एक दवा खाएं। आप तुरंत दौड़ने लगेंगे काका।

राकेश– मेरे पिताजी ठीक तो हो जाएंगे ना मैडम

डॉक्टर मैडम– बिल्कुल ठीक हो जाएंगे। आप बिल्कुल चिंता ना करें।
बैजू– धन्यवाद बेटी।
राकेश– धन्यवाद मैडम। धन्य है आपके माता-पिता जिन्होंने आपको इतने उच्च संस्कार देकर शिक्षित करके एक योग्य नागरिक बनाए हैं।
पंडित जी : धन्य तो तुम भी हो सकते थे बेटा राकेश, अगर अपनी बच्ची को बचा पाते और काबिल बना पाते।
बैजू– पंडित जी इसमें राकेश की कुछ गलती नहीं है। पापी तो मैं हूं, जो अपने बेटे और बहू का कहना तक नहीं माना मैंने जो मुझे इस पाप का सजा मिल रहा है।

(रोहन का प्रवेश)

रोहन –बेटी हो गया क्या? चले हम, अरे पंडित जी प्रणाम।
पंडितजी– सदा स्वस्थ रहो बेटा ,यह है वो धन्य पिता जिन्होंने इस बच्ची को पढ़ा लिखा कर एक काबिल डॉक्टर बनाए।
राकेश –काश, मैं भी अपनी बच्ची को बचा पाया होता आज वो भी इसी उम्र की होती। हे जगत जननी, हे माता भवानी मुझे माफ कर देना। मैं अपनी बच्ची को नहीं बचा पाया।
पंडित जी– बेटा राकेश, बेटा रोहन आज मैं एक सच बताना चाहता हूं। शायद अब वो समय आ गया है।
राकेश –कैसा सच पंडित जी?
पंडित जी –वो सच यह है कि यह डॉक्टर बिटिया वही बच्ची है जिसे तुम्हारे भाई अशोक को मैने सड़क पर फेंकते देखा था. इस डर से कि कहीं फिर इस बच्ची को तुम लोग मारने की कोशिश ना करो, मैंने इसे रोहन और सुनीता को सौंप दिया। एक अच्छे मां-बाप की तरह इन्होंने इस बच्ची को पढ़ाया लिखाया और काबिल बनाया।
बैजू –हे प्रभु इतना बड़ा पाप, मैने जिसे मारना चाहा वो देवी बन कर मुझे बचाने आई है ।

(सभी यह सुनकर चौंक जाते है। बैजू शर्म से आंख तक नहीं मिल पाता। राकेश उसकी पत्नी सब बस अफसोस करते हैं। डॉक्टर बिटिया को गले से लगा लेते है।

पुष्पा –सुनते हो जी! यह तो अपनी लाडो है।
राकेश –हां भाग्यवान अपनी बिटिया, हम तो माफी के काबिल भी नहीं है बिटिया, अभागा पिता समझकर हमें क्षमा कर दो बिटिया

डॉक्टर बिटिया– अब मैं वह आपकी बिटिया नहीं हूं। आप जब मुझे बचा तक नहीं पाए तो फिर मैं कैसी आपकी बटिया। मैं सौभाग्शाली हूं जो मुझे ऐसे मां-बाप मिले। जो बेटे और बेटी में तनिक भी अंतर नहीं करते। आखिर कब तक हम बेटियों को हमारा यह समाज बोझ समझेगा।
अरे हमें कुछ नहीं चाहिए। हमें बस कुछ करने की आजादी दे दीजिए, हमें हमारा अधिकार दे दीजिए। देखिए हम बेटियां इस समाज को , आपके घर को मंदिर बनाकर रखेंगे। हमें बेटों से मुकाबला नहीं करना, हमें बेटी ही रहने दीजिए। हम बेटी बनकर ही अपने अस्तित्व और अस्मिता के लिए लड़ना चाहती हैं।
बैजू –देखा आपने मेरी कुबुद्धि का नतीजा। कहीं आपके घर आपके आसपास तो ऐसा नहीं हो रहा है? भगवान के लिए इस प्रकार की काली करतूत से उन बच्चियों को बचाइए जो जीना जानती हैं, जिलाना जानती हैं!!

(नेपथ्य / बैकग्राउंड)

बेटियां हर क्षेत्र में अपने आप को साबित कर चुकी हैं। हमारे देश में लौह महिला के रूप में एक प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी भी थीं। सेवा और शांति की दूत मदर टेरेसा को तो नोबल प्राइज तक मिल चुका है। आज हमारे देश को चलाने वाली प्रथम महिला अर्थात राष्ट्रपति हैं, वह भी एक महिला है। हमारे देश की वित्त मंत्री - वो भी एक महिला है। हमारे अपने रेल मंडल के कार्मिक विभाग की मुखिया भी एक महिला है। सरकारी या गैर सरकारी देश का कोई भी क्षेत्र नहीं बचा है। जहां महिलाओं ने अपना परचम ना लहराया हो।

**हमेशा याद रखें कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।'**

*************

कविता

# खिड़की

- राजीव कुमार तिवारी
मुख्य गाड़ी लिपिक, जसीडीह

परदेश की खिड़की से
देश दिखता है
दृष्टि के ध्रुवांत पर
झिलमिलाते एक नक्षत्र सा
मन अतीत से
संयुक्त रहता है इस तरह
कि लगभग भंग रहती है
वर्तमान से अन्विती उसकी
मन जहां होता है
उससे इतर
कहीं और होना
होने की विवशता होती है
और कछ नहीं परदेश में हो कर भी
देश में होता है आदमी

मन के देश में
स्मृति के देश में
उदासी अकेलापन घुल मिल न सकने की विवशता
भीड़ चकाचौंध व्यस्तता सफलता के
'बावजूद दिख ही जाता है चेहरे पे लिखा
देश जहां तन नहीं
मन छूटा होता है मन
जिसमें जीवन रचा बसा होता है
पीछे आता है रह रह कर

सफेद उदासी में लिपटा दिन
घुंटते अंधेरे में गुंथी रात आती है
चली जाती है
ध्यान बीते पलों की गलियों में कहीं अटका रहता है ।

*************

# * दो कविताएँ *

शंकर कुमार मिश्रा
सेक्शन कंट्रोलर/आसनसोल

(1)

अदम से शुरू हुए अदम हो जाना है
कहो कोई पत्थर घिसके समझाना है

अक्ल की फितरत बस मासूमियत है
विरानगी में धुंआ-धुंआ हो जाना है

नेकी की राह चले चले कोई कैसे
नासाफ़ चीज़ घर का घर हो जाना है

रहते क़िस्मत पे क्यों नहीं कबूलते
गुमराह होके समंदर-समंदर हो जाना है

क़रार है जीने की अहम त्याग के जियो
ढीली होने से मिट्टी हवा-हवा हो जाना है।

...............

(2)

मैं सोचता हूं एक नजर और मिला लूं
क्या पता डरी सहमी झिझक ही सुना लूं

मैं सोचता हूं....

ख़्वाब है हकीकत से कुछ दो कदम दूर

भंवर में चलकर यदा लजीज़ ही पा लूं

मैं सोचता हूं....

दिल के अधूरे पन्ने कभी कभी अच्छे होते हैं

जिन्हें याद कर अब जरा ही शर्मा लूं

मैं सोचता हूं...

जीवन में मौसम बदलना एक अतरंगी है

गमों को दबा फिर खुशी ही गुदगुदा लूं

मैं सोचता हूं....

ठोकर और ठहराव बस रुकावट ही नहीं है

तरीका ढूंढ नजारों से तजुर्बा ही सजा लूं।

मैं सोचता हूं.....!!

आलेख

# स्त्री जीवन की कथा (आलेख)

-बिजय कुमार राजभर
कनिष्ठ अनुवादक/आसनसोल

स्त्री जीवन की कथा हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसमें स्त्रियों के जीवन, संघर्ष, और मुक्ति की कहानियाँ शामिल हैं। यह साहित्य स्त्री-विमर्श, नारीवादी साहित्य, और सामाजिक आलोचना का एक रूप है, जो स्त्रियों की सामाजिक स्थिति, उनके अधिकारों, और स्वतंत्रता के बारे में बात करता है।

विभिन्न दृष्टिकोण:

**पारंपरिक दृष्टिकोण:**

आदि काल से ही, हिंदी साहित्य में स्त्रियों को घर और परिवार तक सीमित रखने के लिए चित्रित किया गया है, और उनकी शिक्षा और स्वतंत्रता को दबाने की कोशिश की गई है।

**नारीवादी दृष्टिकोण:**

आधुनिक हिंदी साहित्य में, नारीवादी लेखकों ने स्त्रियों के जीवन, संघर्ष, और मुक्ति के बारे में खुलकर लिखा है। उन्होंने स्त्रियों के अधिकारों, स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय के लिए आवाज उठाई है।

**सामाजिक आलोचना:**

कुछ हिंदी साहित्यकार ऐसे भी हैं जो स्त्रियों के शोषण और दमन पर ध्यान केंद्रित करते हैं और सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते हैं। एक स्त्री के जीवन का कुछ इस तरह से बखान है। दूसरों की खुशी के लिए करती अपनी खुशी का बलिदान है। जिस घर में होता उसका जन्म,उस घर में खुशियां फैल जाती हैं। लेकिन ना जाने क्यों कुछ कुछ लोगों के चेहरे पर मायूसी छा जाती है। जो मनाता खुशी बेटी के जन्म का,मतलब उसको ज्ञान है। एक स्त्री के जीवन का कुछ इस तरह से बखान है। जैसे होने लगती बड़ी,उसे एक चिंता सी सताती है। लगता है डर उन नजरों से जो उसे घूर कर जाती हैं। क्योंकि उसे पता है जिस देश में कन्या को देवी माना जाता है। उसी देश में ना जाने क्यों,उसका जिस्म निचोड़ा जाता है। मेरा निवेदन है सब करो स्त्री का सम्मान है। एक स्त्री के जीवन का कुछ इस तरह से बखान है। जिस घर में होता उसका जन्म, उस घर के लिए वह पराई है। और जिस घर में जाती विवाह होकर उसके लिए वह पराए घर घर से आई है। गलती से भी ना करो कभी स्त्री का अपमान है। स्त्री के जीवन का कुछ इस तरह बखान है। अपना पेट बांधकर अपने बच्चों का पालन पोषण कर जाती है। लेकिन न जाने क्यों बुढ़ापे में वही मां दर-दर ठोकरें खाती है। यह कैसी संतान है,और कैसा विधि का विधान है। एक स्त्री के जीवन का कुछ इस तरह से बखान है।

स्त्री के संघर्ष और स्वप्न केवल उसकी अपनी आजादी, अपने स्वतंत्र विचार, अपने देखे गए स्वप्नों को जीने भर से संबंधित नहीं हैं।हमारे परिवार और समाज का ढांचा भी विचार का विषय है।आज भी कोई स्त्री अकेले रात में सफर करने से घबराती है तो आखिरकार यह किसका डर है? 21वीं सदी में पांव धरने के बाद तो यह सब नहीं होना था!

आज स्त्री के जीवन, संघर्ष और स्वप्न को लेकर अनेक कहानियां लिखी जा रही हैं जिन पर विस्तारपूर्वक चर्चा करना यहां उद्देश्य नहीं है।पर आज की कहानियां हमें आश्वस्त करती हैं कि वे अब पहले से भी ज्यादा मुखर रूप में स्त्री के जीवन, संघर्ष और स्वप्न के विविध रूपों को उद्घाटित कर रही हैं।कई लोग कहते हैं कि स्त्री का जीवन एक ऐसी पहेली है जिसे जल्दी में नहीं बूझा जा सकता है।ऐसा वे ही लोग कहते हैं जिन्होंने उसके जीवन को कभी पहेली या रहस्यों से बाहर आने नहीं दिया है।उसकी जटिलताएं, उसकी मान्यताएं, उसकी सीमाएं पहले ही तय कर दी गई हैं जिसमें अब काफी बदलाव भी इधर हुए हैं।

स्त्रियों का संघर्ष अपने-अपने समय के दायरों में रचा और दर्ज किया जाता रहा है।कृष्णा सोबती का 'जिंदगीनामा' एक दस्तावेजी लेखन है।मन्नू भंडारी का 'महाभोज' आज भी प्रासंगिक है।मधु कांकरिया का 'सेज पर संस्कृत' और 'पत्ताखोर' अपने समय में घट रही त्रासदियों का प्रामाणिक प्रस्तुतीकरण है।प्रज्ञा रोहिणाी का 'धर्मपुर लॉज' एक वंचित तबके की समस्याओं की पड़ताल करता है।वंदना राग का उपन्यास 'बिसात पर जुगनू' एक विस्तृत फलक पर रचा गया है।सुमन केशरी की किताब 'आर्मेनियाई जनसंहार' या गरिमा श्रीवास्तव की 'देह ही देश विदेश की धरती' के बारे में एक संवेदनात्मक दस्तावेज हैं।कुछ और मानीखेज रचनाएं स्त्री संघर्षों और प्रतिरोध की चेतना से जरूर उभरकर सामने आएंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। यह स्त्रीजीवन की विडम्बना कहिए या फिर उसकी नियति कि आर्थिक रूप से सशक्त और सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित होने के बावजूद भी वह अपनी शर्तों पर या यों कहें कि साझा शर्तों पर समाज में जीवन निर्वाह नहीं कर सकती | कभी उसे संतान के नाम पर कभी परिवार के नाम पर, कभी प्रेम के नाम पर अपनी आकांक्षाओं का गला घोट, खुद को साबित करना पड़ता रहा है| प्रश्न यह है कि आखिर कब तक एक स्त्री इन सब का बोझ ढ़ोती रहेगी, जिसे उसके अस्तित्व के साथ ही चस्पा कर दिया गया है और आखिर स्त्री ही क्यों? इन्हीं संवेदनाओं और प्रश्नों के मध्य एक सफल, विचारों से उन्नत, शिक्षित एवं आर्थिक रूप से स्वावलंबी स्त्री के व्यक्तिगत जीवन की हताशा और वही पुरानी पुरुषवादी सत्ता के समक्ष दो-चार करती स्त्री की कथा है।

प्रमुख विषय: **स्त्री-विमर्श:** हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श स्त्रियों के जीवन, संघर्ष, और मुक्ति की कहानियों को शामिल करता है।

**नारीवादी साहित्य:**

नारीवादी साहित्य स्त्रियों के अधिकारों, स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय के लिए संघर्ष करता है। **सामाजिक आलोचना:** सामाजिक आलोचना स्त्रियों के शोषण और दमन पर ध्यान केंद्रित करती है और सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करती है।

उदाहरण:

- प्रेमचंद की कहानियाँ: प्रेमचंद की कहानियाँ, जैसे "गुल्ली" और "सीता", स्त्रियों के सामाजिक और आर्थिक शोषण का वर्णन करती हैं।
- मन्नू भंडारी की कहानियाँ: मन्नू भंडारी की कहानियाँ, जैसे "एक कहानी यह भी" और "अंधा युग", स्त्रियों के जीवन के विभिन्न पहलुओं का वर्णन करती हैं।
- उषा प्रियंवदा की कहानियाँ: उषा प्रियंवदा की कहानियाँ, जैसे "अग्नि परीक्षा" और "नारी का संघर्ष", स्त्रियों के जीवन, संघर्ष, और मुक्ति के बारे में बात करती हैं
- पुरुष और स्त्री का मूलभूत अंतर उनकी मानसिक संरचना में मौजूद है।पुरुष स्त्री के प्रति कितना भी संवेदनशील हो, वह स्त्री की तकलीफ का द्रष्टा ही हो सकता है, भोक्ता नहीं।यही बात स्त्री के लिए भी कही जा सकती है, लेकिन स्त्री चूंकि हमारी सामाजिक संरचना में हमेशा प्रताड़ित रही है और उसका दर्जा दोयम ही रहा है इसलिए स्त्री का अपने बारे में लिखा गया अपना वृत्तांत ज्यादा प्रामाणिक होता है।पुरुष रचनाकारों ने अपनी कलम से स्त्री को तमाम आलंकारिक उपकरणों से सजाया संवारा है या फिर उसकी व्यथा पर उद्वेलित होकर आंसू भी उड़ेले हैं, लेकिन अपना भोगा और झेला हुआ यथार्थ एक स्त्री खुद ही लिख सकती है और वह बेबाक ज्यादा प्रभावी होगा।पुरुष और स्त्री रचनाकारों की भाषा में भी एक स्पष्ट सा फर्क देखा जा सकता है।वैसे अपवाद हर जगह हैं।निर्मल वर्मा की कुछ कहानियां, स्वयंप्रकाश की कहानी 'अगले जनम' को पढ़कर कोई नहीं कह सकता कि यह किसी पुरुष रचनाकार ने लिखी है।पवन करण की कुछ कविताएं भी सघन स्त्री संवेदना की बानगी हैं।ऐसे ही उदाहरण स्त्री रचनाकारों में भी मिलेंगे, जैसे मन्नू भंडारी का 'महाभोज' या मृदुला गर्ग का 'अनित्य'।केवल यही नहीं खत्म होती है इससे आगे भी जीवन में अनेक उताड़-चडाव का सामना करना पड़ता है। पिता की प्यारी पति की दुलारी हो ना हो पर गलती ना होते हुए भी वो सबकी गुनहगार जरूर हो जाती है। क्या यही है नारी जीवन ? अगर हाँ,तो इसे कोई रोकता क्यों नहीं क्या कोई राम नहीं रहा यह शिव के समान पार्वती जितना प्रेम नहीं रहा, या फिर आज भी राधा हि जलेगी प्रेम में और कृष्ण रुक्मणी के साथ जीवन यापान कारेगें।

निष्कर्ष: नारी जीवन की समस्याओं में मुख्य रूप से बाल विवाह, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, विधवा समस्या, और लैंगिक भेदभाव शामिल हैं। इन समस्याओं के कारण महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई होती है। इसके अलावा, महिलाओं को अक्सर सामाजिक और आर्थिक रूप से कमतर माना जाता है, जिससे उनकी स्वतंत्रता और समानता बाधित होती है। स्त्री जीवन की कथा हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण विषय है, जो स्त्रियों के जीवन, संघर्ष, और मुक्ति के बारे में बात करता है। यह साहित्य स्त्रियों के अधिकारों, स्वतंत्रता, और सामाजिक न्याय के लिए आवाज उठाता है और सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करता है।

इन समस्याओं से निपटने के लिए, हमें महिलाओं के अधिकारों को बढ़ावा देने और लैंगिक समानता को सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। इसके लिए हमें बाल विवाह और दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों को खत्म करना होगा, घरेलू हिंसा के खिलाफ सख्त कानून बनाना होगा, और महिलाओं को शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच प्रदान करनी होगी। इसके अलावा, हमें महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए भी काम करना होगा ताकि वे अपनी जीवन शैली को स्वयं तय कर सकें और अपनी प्रतिभा को विकसित कर सकें।

**************************************************************************

यात्रा संस्मरण

# थाने का मुंशी

- **अनिल कुमार वर्मा**
कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग/पूरे/आसनसोल

मैं अपनी पत्नी के साथ शक्तिपुंज ट्रेन से अपने गृहनगर डालटनगंज जा रहा था। रात के करीब 8:00 से 8:30 बज रहे होंगे कि मेरी पत्नी की नज़र एक अद्वितीय व्यक्ति की ओर गयी। मेरी पत्नी ने इशारों में कहा, उस व्यक्ति को देखने को। जब मैंने देखा, तो मैं भी दंग रह गया। इतनी रात को सनग्लास में आदमी ओ भी बिलकुल अलग टसन में, एकदम शांत किंतु भौकाल कायम किए हुए। वास्तव में, वे मेरी सीट के एकदम सामने के व्यक्ति द्वारा फोन पर की जा रही बातों को काफी ध्यान से सुन रहे थे। फोन पर हुई बात-चीत के दौरान वे उनके पदनाम को जान चुका थे। जब पदनाम को जान गये तो उनके काम को भी जान गये। अब सनग्लास वाले आदमी का मौन भंग होता है और अपनी उंगली से इशारा करते हुए मेरे सामने बैठे व्यक्ति से बोल पड़े,

- आप थाने के मुंशी हैं..?
- जी हां सर..।
- आप बोकारो में पदस्थापित हैं?
- जी हां सर..।
- आपकी नियुक्ति फलां बैच की है?
- जी हां सर..।

आगे सवाल का सिलसिला जारी रखते हुए बोले :

- आप कहां जा रहे हैं?
- जी सर, अपने घर, पलामू, डाल्टनगंज।
-डाल्टनगंज में कहां?
-सर, अघोर आश्रम।
-अघोर आश्रम में कहां?
- सर फलां जगह।
सर, आप कौन हैं?
एकदम फिल्मी जवाब आता है
- आप जहां काम करते हैं और आपका जहां घर है, मैं वहां का मास्टर हूं।

- सर आप कौन हैं?

सनग्लास वाले भाई साहब बोले,

-अरे..थोड़ा धीरज रखीए अब एक ही बार में सब मत जानने का कोशिश कीजिए। धीरे-धीरे आपको सब पता चल जाएगा।

प्रश्न करने का तौर-तरीका और हाव-भाव से पता चलता है कि शायद कोई बड़े पद पर आसीन हों। उनकी बातों में इतना आकर्षण था कि उस सीट के आस-पास बैठे लोग लोग उन्हीं को सुन रहे थे। सनग्लास वाले महोदय कुछ देर शांत रहे, फिर बोल पड़े :

- मैं भी थाने का मुंशी हूं। मैं हुसैनाबाद(पलामू) में पदस्थापित हूं। अभी सभी थाने को मैडम रेशमा रमेशन (पुलिस अधीक्षक,पलामू) बहुत टाइट किये हुए हैं। अरे भाई, एक बात तो है, साउथ के अधिकारी बहुते ईमानदार होते हैं। आजकल थानों में उनका बार-बार औचक (अचानक) निरीक्षण हो रहा है। आईं थी वों एक दिन मेरे थाने में, मैं तो डर से थर-थर कांपने लगा, मेरा तो पूरा हालते खराब हो गया था। लगी फाइल चेक करने। कुछ रिकॉर्ड मैंनटेन था, कुछ नहीं था। लगी सवाल करने इसका रिकॉर्ड क्यों नहीं है, तो उसका रिकॉर्ड क्यों नहीं है?

सनग्लास वाले महोदय को देखकर नहीं लगा था कि वे अपनी गलती, डर और कमजोरी इतनी बेबाकी से उजागर करेंगे। आगे सनग्लास वाले महोदय मेरे सामने बैठे व्यक्ति को सुझाव देते हुए बोले : देखिए भाई, आप पूरा का पूरा फाइल का रिकॉर्ड मैंनटेन रखिए, तब आप कहीं नहीं फसेंगे, नहीं तो बहुते दिक्कत है। अभी तो दण्ड विधान में बदलाव भी आ गया है, धारा भी बदल गया है। पहले चोरी का घटना कुछ और धारा में था अब इसे बदल दिया गया है। लेकिन जो भी है, अब अच्छा हो गया। पहले कानून को इतना कम्पलेक्स कर दिया गया था कि मते पूछिए। मुझे दण्ड विधान में हुए इस बदलाव के ऊपर एक नयी किताब मंगवा कर पढ़ना है। इस तरह की किताब आप भी जरूर पढ़िए।

मेरे सामने वाले व्यक्ति ने हां में हां मिलाते हुए जवाब दिया :- पढ़ना तो जरूर होगा सर। इतने में हमारी ट्रेन बड़काकाना स्टेशन पहुंचने वाली थी, हमने ट्रेन की समय सारणी देखी तो पता चला शक्तिपुंज से पहले पलामू एक्सप्रेस डालटनगंज पहुंचा रही थी । हम अपनी ट्रेन पलामू एक्सप्रेस की ओर बोर्ड होने के लिए बढ़ते हैं और स्लीपर क्साल में जाकर बैठ जाते हैं। तुरंत मैंने आईआरसीटी में टिकट देखा, तो टिकट उपलब्ध था और मैंने दो टिकट काट लिए। अचानक हमारी नजर फिर सनग्लास वाले उसी व्यक्ति पर जाती है, जो थाने के मुंशी थे। वे भी उसी कोच में चढ़े। हमें लगा कि कहीं फिर कुछ मनोरंजक बातें सुनने को मिले, परंतु अब वो शांत हो गए थे, बिलकुल पहले की तरह।

कविता

# आदमी

- **उपेन्द्र प्रसाद**
सेवानिवृत्त मुख्य टिकट निरीक्षक/ चित्तरंजन

ऐसी मंजिल, मंजिल क्या,
जब मंजिल ना मिले
आदमी की भीड़ में,
आदमी ना मिले।
कोसता हूँ मुकद्दर को
क्या यही तकदीर है?
थक गया हूँ
गली गली ढूँढ़ते-ढूँढ़ते
कहीं नहीं वह तस्वीर है।।
यादें हैं सिर्फ दिखावे का
दिल में कुछ और चल रहा है
जज्बात में जान गँवाते लोग
आदमी से आदमी जल रहा है।।
खुशबू ढूँढ़ते फूलों में
आदमी में नहीं जो
हम बोते आए हैं
वही तो फल मिल रहा है।
दुर्लभ होता अमृतफल
अब जहर उगल रहा है।।
घर में कलह
सेज बिछा काँटों का
दम घुटता अपनों से
पल-पल घर से भागता आदमी
आग से दूर है
फिर भी उबल रहा है।।
जिसे हार कहते
वह जीत रहा है।
खाए हैं कसम
इस मिट्टी की लकीर लहू का
खींच रहा है।।
मोल होता है सामानों का
आदमी का नहीं
इतना गिर गया कद
आदमी का पैसे में आदमी बिक रहा है।।
नफरत में जिन्दगी जीते हैं लोग
फासले बढ़ते गए
कम होते गए
आदमी में आदमी
बेकाबू होती जनसंख्या
घटते गए लोग।।
कुछ ऐसा होता
कुछ खास कर पाते
साँसे चुरा करके लोग
कुछ अपने लिए कुछ
दूसरों के लिए
जाते-जाते
कुछ वफा कर जाते लोग ।।

************

कहानी

# प्राइवेसी

**पुरुषोत्तम कुमार गुप्ता**
वरिष्ठ अनुवादक,
पूर्व रेलवे,आसनसोल मंडल

- तुम सुन क्यों नहीं रहे हो? मेरा मोबाइल दो तो!
- अरे क्या करेगी-मोबाइल? रात-दिन उसी में गर्क रहती है। उसी से पेट भरेगा!
- हाँ-हाँ – भरेगा पेट! तुम दो तो पहले.....। आखिर मेरी भी कुछ प्राइवेसी है कि नहीं?
- क्या रखी है - इस छोटे-से डिवाइस के बड़े-से पेट में? हम लोगों को यह भूखा रख देगा, मगर तुम उसी का पेट भरने में लगी रहना? और रही बात प्राइवेसी की तो हम दोनों के बीच भी होती है प्राइवेसी?
- हाँ तो! तुम्हारा क्या जा रहा है? तुम भी तो सुबह होते ही मुँह-हाथ धोए बिना उसी में लग जाते हो। ऑफिस चले जाते हो। वहाँ भी तुम अपनी ड्यूटी सिन्सियरली थोड़े ही करते होगे। मैं सब जानती हूँ- तुम्हारा एडिक्शन!
- अरे पाजी- एडिक्ट मैं हूँ कि तुम बन गयी हो? रील, ह्वाट्सएप,इंस्टाग्राम,मेसेंजर,स्टेट्स,फेसबुक,ब्लॉग---- बाप-रे- बाप! अभी कल ही सिन्हा बता रहा था कि - यार भाभी सोशल मीडिया पर पूरी एक्टिव है!
- ओहो--- तो इसलिए जनाब को जलन हो रही है! तुम-जैसे अन-सोशल आदमी को मुझ से कुछ तो सीखना चाहिए!
- अच्छा --! तो मुझे भी तुम्हारी तरह पगला के इस वर्चुअल दुनिया का सॉफ्ट शिकार बन जाना चाहिए। घर-परिवार और ऑफिस-समाज की जिम्मेदारियों को ताक पर रख कर इसी में गर्क हो जाना चाहिए। समाज में पड़ोसियों से मेल-मिलाप भले नहीं हो, दूर देश के अपरिचित लोगों से हवा-हवाई चैटिंग करते रहूँ?
- हाँ तो----! समाज के पास-पड़ोसी हमारे लिए आखिर करते क्या हैं? मिलो तो बस अपना रोते हैं। बुलाओ और चाय-पानी कराओ तो नौ नखरा पसारेंगे कि भाभी चाय आज की कुछ फीकी रह गयी थी। लगता है कि मन से नहीं बनायीं थीं! अब यही सब सुनने के लिए उन लोगों से नाता रखूँ!
- अरे, भाभी हो, कुछ हँसी-मजाक नहीं करेंगे!
- और इनके बाल-बच्चे---- बाबा-रे-बाबा! भगवान बचाएँ इनसे!
- अच्छा! इसीलिए सब से कट कर अपने में और अपने इस नन्हें-से खिलौने में मगन रहती हो?
- हाँ तो और क्या करुँ! तुम्हारे जाने के बाद बिट्टू स्कूल चला जाता है। इसके बाद–और क्या! यह नन्हा-सा खिलौना और इसमें समायी इसकी बहुत बड़ी-सी दुनिया के क्या मजे हैं---- वह तुम क्या जानो? फ्रेंड रिक्वेस्ट से तुम्हें मतलब नहीं है। कोई अन-फ्रेंड कर दे या ब्लॉक कर दे तो तुम्हें कोई फर्क नहीं पड़ता! तुमसे कोई लाइक या कमेंट की कोई आशा भी कर सकता है! एकदम से नीरस और नाशुक्रे हो!
- अच्छा ! अब मैं यही सब करने को रह गया हूँ? शादी-ब्याह या किसी फैमली फंक्शन में जाऊँ तो लोगों से मिलूँ-जुलूँ नहीं! रिश्तेदारों से हाल-समाचार नहीं पूछूँ! तुम्हारी तरह ऊँट की तरह गर्दन टेढ़ी करके और तोते की तरह थूथन निकाल के सेल्फी लेता फिरूँ? स्टेट्स लगाने में रात-दिन एक कर दूँ? पता भी है कि स्टेट्स बनता कैसे है या फिर इसे बनाने में कितनी मेहनत लगती है? या फिर यह भी पता है कि स्टेट्स है किस चिड़िया का नाम?

- अच्छा, तो तुम पर्सनल तंज करने पर उतर आए हो? मुझे अनपढ़-गंवार कहना चाहते हो? आखिर तुम खुद को समझते क्या हो- मर्द या मालिक?
- अच्छा - ये बात ! तुम्हें शादी के सत्रह साल बाद -आज भी पता नहीं है कि मैं मर्द भी हूँ और मालिक भी! इसलिए तुम्हें इस फिसलन भरी दुनिया निकल आने को कह रहा हूँ। बेहद मुश्किल राहों और फ्रस्ट्रेशन के फंदे से भरी हुई है - यह दुनिया!
- तुम तो कहोगे ही! तुम हमेशा से ही मेरी खूबसुरती और लोकप्रियता को लेकर ऑब्सेसिव रहे हो। तुमने कभी भी मेरी कद्र की ही नहीं!
- अच्छा .. ! यह बताओ मेरे लाख मना करने के बावजूद तुम दूर देश के चार-पाँच सखी-सहेलियों के साथ मिलकर कुंभ स्नान करने गयी थी कि नहीं?
- हाँ तो... ?
- मैंने और बिट्टू ने बार-बार चेतावनी दी थी कि अथाह लोगों की भीड़ बेकाबू मन-मिजाज के साथ जहाँ-तहाँ से प्रयागराज की ओर बदहवास भागी जा रही है। ऐसे बदहवास माहौल में तीर्थ करने जाना ठीक नहीं होगा।
- हाँ-हाँ .. ! तुम को धर्म-कर्म करने से कोई मतलब ही तो नहीं है। बेटे को भी अपने रंग में रंग लिए हो। तुम लोगों को तो पूजा-पाठ अब बोझ लगने लगा है।
- अरे नहीं रानी! ऐसा कुछ नहीं है। धर्म-कर्म-तीर्थ आदि के नाम पर जो ढोंग और आडंबर का बोल-बाला हो चला है- मैं उसके विरुद्ध हूँ। इनके नाम पर कर्म और जिम्मेदारियों के प्रति जो उदासीनता फैलायी जा रही है, मैं उसके खिलाफ हूँ। इन्हीं के ओट में जो नंगई-दंगई की जा रही हैं - वही मुझे बरदास्त नहीं होता! बरदास्त नहीं हो रहा है!!
- नंगई-दंगई की जा रही हैं? क्या कह रहे हो–कुंभ में भी?
- हाँ-हाँ ! अपने मोबइल का पासवर्ड बोलो।
- अच्छा फिर आ गए ना अपनी औकात पर!!
- अरे , समझो कुछ। बताओ तो जरा!!
- नहीं बताती। जाओ ना, नहीं बताती। क्या कर लोगे?
- इतनी हेकड़ी ठीक नहीं होती रानी? इस सोशल मीडिया के नाम पर जितना कुछ अनर्गल परोसा जा रहा है- तुम उसी के नशे में हो! कार्ल मार्क्स ने धर्म को कभी अफीम कहा था। आज के दौर में मैं देख रहा हूँ कि धर्म का एक बड़ा जोड़ीदार नन्हां-सा यह खिलौना भी हो गया!
- अच्छा इतना भाषण मत दो। निकालो मेरा मोबाइल। मैं बोलती हूँ पासवर्ड!!
- यह देखो–तुम्हारे सोशल मीडिया पर तुम्हारी कुंभ-यात्रा का विशाल और विराट स्वरूप! ये तुम ही हो ना- त्रिवेणी में बदहवास-सी डूबकी लगाती ......। तुम्हारे बदन को कितने करीने से इस सोशल दुनिया के बीचो-बीच परोसा गया है!!
- नहीं-नहीं-नहीं!!
- नहीं, अभी और भी है। थोड़े-से ओट में या कहो कि तिनकों की ओट में कपड़े बदलनेवाली यह तुम ही तो हो- रानी!! कितनी प्राइवेसी रह गयी है तुम्हारी!!
- अरे बस करो- बस करो ना!!

- मैं तो बस कर दूँ, मान लिया कि तुम भी कि बस कर देती हो। मगर सैकड़ों-हजारों की भूखी नजरों से गुजरती हुई ये तस्वीरें - ये वीडियो - आखिरकार बिट्टू के पास भी पहुँचेंगे- हमारे-तुम्हारे घरवालों के पास भी पहुँचेंगे– पास-पड़ोसियों के पास पहुँचेंगे---- तब-तब....... !!

(संवाद शेष)

आलेख

## हिंदी से डरिए मत, उसे अपनाइए!


➢ राहुल राज

उप मुख्य राजभाषा अधिकारी

सह

वरिष्ठ मंडल सुरक्षा आयुक्त

पूर्व रेलवे,आसनसोल


आखिर हमलोग डरते किससे हैं? विचार करके देखे तो स्पष्ट होगा कि हमें डर अनजाने लोगों से लगता है, क्रूर या दुर्दांत जीवों या व्यक्तियों से लगता है। पहले से जिनके बारे में बता दिया जाता कि वे बड़े भयावह या जानलेवा होते हैं। भूत-प्रेत-चुड़ैल आदि किसिम-किसिम के काल्पनिक शिगूफे या भ्रामक और भयानक रचे जाते हैं और परंपरावश हमारे दिल-ओ-दिमाग में उनका डर बिठा दिया जाता है। कुछ इस प्रकार से कि उनके वास्तविक वजूद के न रहने के बावजूद कुछ ऐसी तिकड़म भिड़ायी जाती है कि हमें उनके बहाने डराया जाता रहता है! यदि विश्लेषण करने को बैठेंगे तो यह तथ्य साफ तौर पर उभर कर सामने आएगा कि डर वस्तुत: कहीं बाहर से पैदा नहीं होता, वह हमारे अंदर की कुंठाओं या पूर्वस्थापित परिकल्पनाओं का परिणाम होता है।

अब, आइए सरकारी कामकाज में हिंदी के अनुप्रयोगों पर! इसके लिए भी कुछ ऐसा माहौल या वातावरण पहले से बना-बनाया मिलता है कि :-

- अरे, हिंदी बहुत भारी है।
- इसमें काम करोग तो समझेगा कौन?
- लिखने-पढ़ने बैठोगे, तो कुछ-का-कुछ लिखा जाएगा।
- अर्थ का अनर्थ हो जाएगा।
- स्त्रीलिंग-पुल्लिंग का इतना ना, दिक्कत होता ना कि पूछो ही मत!!
- इतना ही नहीं ह्रस्व इ, दीर्घ ई, ह्रस्व उ और दीर्घ उ का भी झंझट है। कितना-कितना देखिएगा!
- इतना ही नहीं, आज के दौर तो कंप्यूटर और इंटरनेट का है, इसमें भला बताइए- हिंदी कहीं फिट होती है?
- पता नहीं राजभाषावाले बीच-बीच में पता नहीं क्या-क्या प्लान करते रहते हैं कि हिंदी में लिखो- हिंदी में जारी करो। अब भला इस हिंदी की कोई उपयोगिता है, जब सारी दुनिया अंग्रेजी की मुरीद बनी हुई है।

• उसमें हिंदी सीख कर या हिंदी में काम करके कौन-सी क्रांति होनेवाली है?

गौर करेंगे तो ज्ञात होगा कि ऐसे शिगूफे छोड़नेवालों में ज्यादातर वही लोग रहते हैं जिन्हें न तो अंग्रेजी अच्छे से आती है और ना ही हिंदी! हिंदी के खिलाफ नकारात्मक बोध पैदा करने में इनकी भूमिका सर्वाधिक होती है। काम को ठीक से नहीं करने या उसमें लापहरवाही बरतनेवालों में भी यही भावना भरी हुई रहती है। वे समझते हैं कि हिंदी का विरोध करके या फिर हिंदी के खिलाफ भ्रामक वातावरण बना कर अंग्रेजी के सांचे में पूरा सरकारी तंत्र ढाल देंगे। कभी सोच कर देखिए - आप हैरान हो जाएंगे कि ऐसे लोगों की डिक्सनरी में मुश्किल से अंग्रेजी के डेढ़-दो सौ शब्द रहा करते हैं। उसी के बलबूते वे सरकारी पत्राचार में अंग्रेजी को ढालते रहते हैं। किंतु फील्ड में जब भी उतरना पडता है तो उन्हें हिंदी का या फिर अपने यहाँ की स्थानीय भाषा का सहारा लेना ही पड़ता है।

अब आइए चलते हैं केंद्र सरकार के कार्यालयों में- ध्यान में तो होगा कि यहाँ कामकाज की भाषा अर्थात राजभाषा हिंदी ही है। फील्ड में हो या फाइल वर्क हो- राजभाषा के रूप में हिंदी या फिर सहभाषा के रूप में अंग्रेजी ही मान्य है। ब्रिटिश राज की तर्ज पर अंग्रेजी को स्वतंत्र भारत में राज-काज की मान्यता बनी रही और 14 सितंबर,1949 में संविधान सभा द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किए जाने के बावजूद परंपरावश अंग्रेजी साथ-साथ चलती रही। इसके मूल में उपरोक्त उल्लिखित तथ्यों की अहम् भूमिका रही कि हिंदी बड़ी कठिन,जटिल और उलझाऊ भाषा है

असल में यह दिक्कत इसलिए भी आयी क्योंकि अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का जो ढांचा तैयार किया गया वह संस्कृतनिष्ठ कठिन शब्दावली से लैस था। जब इन शब्दों को लेकर हिंदी सरकारी तंत्र के पत्राचार के कैनवास में उतरती थी तो, लिखने,पढ़ने और समझनेवालों को दिक्कत होती थी। । हलांकि गौर करेंगे कि उस दौर में अंग्रेजी खुद भी विक्टोरियन और एलिजाबेथ के दौर के भाषायी ढर्रे पर चल रही थी। इसलिए उनके हिंदी प्रारूप भी इसी तर्ज पर जटिल हो जाते थे।

उस दौर के लोग-बाग इस तरह की विसंगति का सारा ठीकरा राजभाषा हिंदी पर फोड़ देते थे- बिना यह समझे कि जब अंग्रेजी प्रारूप आलंकारिक सांचे में था तो उसकी हिंदी भी तो उसी खांचे में होगी।

खैर, इसी के निराकरण के लिए राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम और संशोधनों के तहत हिंदी के यह सर्वव्यापी नियम रखा गया गया कि फाइल वर्क और पत्राचार में हिंदी को सरल और सर्वग्राहय बनाने की परिपाटी बनी और आज स्थिति ऐसी बन गयी है कि सरल शब्दावली से लैस होकर राजभाषा हिंदी बड़े व्यापक पैमाने पर आगे बढ़ रही है। हिंदी की इस सर्वव्यापकता से आप मुँह नहीं चुरा सकते। आज के इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम में भी हिंदी बड़े आराम से ढलती जा रही है। अंतराष्ट्रीय तौर पर हिंदी और भारतीय भाषा पर काम करनेवाले आइटी सेक्टर के विशेषज्ञ पूरे लगन के साथ हिंदी के सॉफ्टवेयर और एप तैयार करते जा रहे हैं। दिनोंदिन इस क्षेत्र में क्रांति आ रही है और इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली पर भी हिंदी सहज और सरल बनती जा रही है एवं उनके सांचे में ढलती जा रही है।

जरुरत है तो बस, आपके आगे आने की! हिंदी के प्रति कुछ अपनापन जताइए। वह पराई थोड़ी है- डरनेवाली या डरानेवाली थोड़ी है। यह तो आपके पास की सर्वश्रेष्ठ संपर्क भाषा है। इसकी लिपि सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक लिपि है। हिंदी आप बढ़िया बोल लेते हैं तो लिख भी बढ़िया लेंगे। बस अंदर के डर को मार कर हिंदी की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाइए। उससे जुड़ जाइएगा तो आपको उससे डर नहीं लगेगा। हिंदी का यही तो अपनापन है। लंबी दौड़ का डर दूर करने के लिए सबसे पहले छोटे-छोटे कदमों से चलना पड़ता है। आप भी यही कीजिए ना! छोटे-छोटे पत्राचार के प्रारूपों को हिंदी में तैयार करते रहिए। हिंदी भाषा एवं अनुवाद से संबंधित आधुनिक तकनीकी सॉफ्टवेयर एवं एप का सहयोग लेना शुरू कीजिए। धीरे-धीरे मन रम जाएगा और बड़े प्रारूप भी हिंदी में तैयार करने लगेंगे। यही होती है- झिझक मिटाने और भय को मिटाने की पहल। पहल छोटी होती है, किंतु परंपरा बन जाए तो परिणाम बड़े सुखद निकलते हैं।

*************

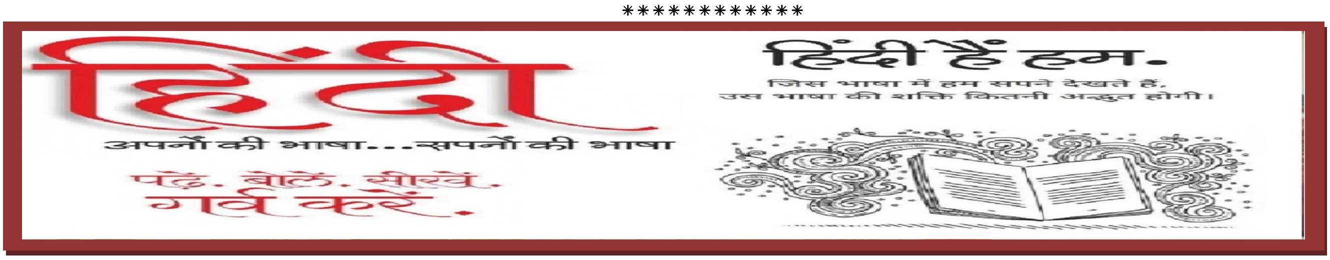

ललित निबंध

# जिउतिया : आस्था और मंगल का लोकपर्व

विश्व मातृ दिवस पर

➢ **संजय राउत**
**कनिष्ठ अनुवादक**
**राजभाषा विभाग/आसनसोल**

"जिउतिया" एक शब्द आस्था का,
जननी का अपनी संतान की मंगल कामना का,
उनके दीर्घायु जीवन की कामनाओं का,
"मेरे बच्चों के सारे कष्ट मेरे हिस्से में आ जाए और
बदले में उनका जीवन निष्कंटक हो" -
इस कामना का एक "धागा" अपने आप में
कई भावनाओं, कामनाओं और आशीर्वाद को समेटे हुए!
एक "धागा" संतान के लिए एक अदृश्य रक्षा कवच का
माँ, माता, माई इस संसार में अपने बच्चों के लिए सबसे बड़ा अभ्यारण्य!
उसकी आँचल की ओट, तमाम संकटों से टकराने की क्षमता रखने वाली
एक वज्र की दीवार
उसके आँसुओं की छलकन
किसी के भी हृदय को भेदने समर्थ,
बूँद जो गिर जाए, तो प्रलयंकारी
उसकी एक मुस्कान,
जो संतान को हर्ष व संतोष से तृप्त कर दे
उसका हृदय सागर से भी गहरा-
जिसमें अपने तमाम दुख, कष्ट, अभाव, पीड़ा को विसर्जित करके
केवल मुस्कान बिखेरे बच्चों के लिए ........

जन्म से पूर्व, आजीवन और मरने के बाद भी
जो किसी के कल्याण की कामना करता है -
निस्पृह भाव से -
तो वह केवल और केवल माँ ही है और कोई नहीं !
निस्वार्थ, निष्कपट, त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति !

समूचे दिन निर्जला उपवास के साथ संतान के लिए सब कार्य करते हुए भी
व्रत का पालन करने की क्षमता व अदम्य इच्छा केवल माँ में ही हो सकती है।
.......... और अंततः एक दिन ....विदा, चीर विदा ....... माँ का
औ'शेष...... बस स्मृति, यादें, पीड़ा !!!
नहीं...... बल्कि रह जाता है -
....वात्सल्य, प्रेरणा, अभय व सांत्वना के अशेष-अमृत स्रोत की अनुभूति में पिरोया वह "धागा", जिउतिया ।।

जिउतिया के बाद अगले दिन मातृ नवमी का दिन होता है, दिवंगत मातृ-आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने का एक खास दिन, जैसे हम अपने पितरों को पितृपक्ष के निर्धारित तिथि/महालया के दिन विधि पूर्वक अपनी श्रद्धा अग्रासन के रूप में अर्पित करते हैं।

लोकपर्व की पहचान ही होती है - उसकी सरलता- उसकी सहजता! आडंबर से परे, भाव केंद्र में होता है। भारत जैसे विशाल और विविधता से भरे देश को यदि कोई एक सूत्र में बांधता है, तो वह इसकी लोक संस्कृति ही है। भाई, बहन, माता, पिता, पति अर्थात समूचे परिवार के कल्याण के लोक व्यवहार में अनेक लोक पर्व पूरे उल्लास, उमंग और प्रेम/स्नेह के साथ मनाए जाते हैं। भोगाली बिहू, लोहड़ी, गुड़ी पड़वा, पड़वा, बोनालू, पड़वा, बोनालू, पुथांडु, ओणम, पोंगल, विशु, विशु, फगली, जमाई षष्ठी, खीर भवानी आदि लोक त्यौहारों के बीच उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड के लोक पर्वों की भी एक लंबी परंपरा है। होली/फगुआ, तिज, कर्मा, सरहूल, बाहा, भैया दूज, रक्षा बंधन, छठ आदि लोक पर्वों में प्रकृति से लेकर परिवार के मंगलकामना का विराट भाव निहित रहता है। भेदभाव से ऊपर जहाँ भाव ही प्रबल हो, वहीं लोकपर्व की सफलता है। माँ,माई,आई या माता - आप उसे जो भी संबोधनदें, वह हमेशा बोध कराती है कि वह अपनी संतानों के लिए कुछ भी कर सकती है- सर्वस्व त्याग सकती है! नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व का विस्तार माँ में ही दिखता है। संतान के सर्वांगीण मंगल के लिए ही माताएँ जिउतिया पर्व करती हैं। इससे संबंधित लोककथाओं पर गौर करेंगे, तो ज्ञात होगा कि इन कथाओं में जीव-जंतुओं से लेकर आमलोग और राजाओं को भी जगह मिली है। सभी में अपनी संतान या भावी पीढ़ी के लिए मंगल का भाव रहता है। माताओं के प्रति एकमात्र यही कामना और याचना है कि :-

"रे माई, कहीं भी होखबे जानिला कवनो फरक ना पड़ी तोरा खातिर, काहे कि जहवां भी रहबे, ओहिजे स्वर्ग बस जाई। बस आपन संतान पे आशीर्वाद बनवले रखिहे।"

.............................

## राजभाषा नियम 1976 के कुछ प्रमुख प्रावधान, जिनका अनुपालन आवश्यक है।

• नियम 5 के अनुसार प्रावधान है कि 'हिंदी में प्राप्त या हिंदी में हस्ताक्षरित किसी भी पत्र का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।'

• नियम 6 के अंतर्गत यह व्यवस्था दी गयी है कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी होने वाले दस्तावेज पर हस्ताक्षरित करनेवाले अधिकारी को यह सुनिश्चित कर लेना है कि ये हिंदी और अंग्रेजी (द्विभाषी) में हैं। अर्थात इनके द्विभाषी में जारी कराने का दायित्व हस्ताक्षर करनेवाले अधिकारी का है। राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत महत्वपूर्ण दस्तावेज इस प्रकार हैं : **कार्यालय आदेश(ऑफिस ऑर्डर), परिपत्र(सर्कुलर), नियम(रूल्स), परमिट,लाइसेंस, टेंडर, कॉन्ट्रैक्ट,एग्रीमेंट आदि।**

• नियम 7 के अंतर्गत यह व्यवस्था केंद्र सरकार के कोई भी कर्मचारी अपना अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में दे सकता है। उससे से यह अपेक्षा नहीं रखी जाएगी कि वह अपने अभ्यावेदन का अनुवाद दे।

• नियम 8 के अंतर्गत यह व्यवस्था केंद्र सरकार के कोई भी कर्मचारी सरकारी टिप्पणी हिंदी या अंग्रेजी में दे सकता है। उससे से यह अपेक्षा नहीं रखी जाएगी कि वह टिप्पणी का अनुवाद दे।

• नियम 8(4) में यह व्यवस्था रखी गयी है कि केंद्र सरकार का कोई भी कर्मचारी यदि हिंदी में प्रवीण(हिंदी भाषी या हिंदी माध्यम से पढ़ा-लिखा) हो तो उनके अधिकारी हिंदी में कार्य करने के लिए उन्हें व्यक्तिश: आदेश जारी कर सकते हैं।

कविता

# ह्वाट्सएप ग्रुप

- कार्तिक सिंह
उप मुख्य वाणिज्य प्रबंधक(डीबी)
पूर्व रेलवे,कोलकाता

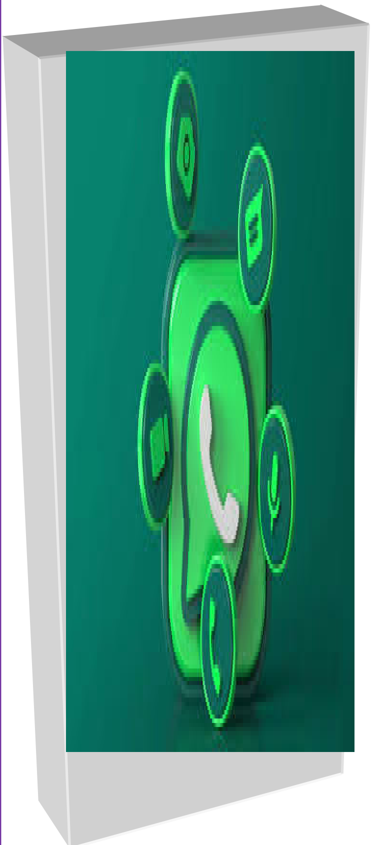

ह्वाट्सएप ग्रुप बना बड़े प्यार से,
दोस्त जोड़े गए भरमार से।
पहले सबने "जय-जय" बोला,
फिर धीरे-धीरे बढ़ा था शोला!

सुबह-सुबह "गुड मॉर्निंग" आई,
फूलों में चमकी सूरज की परछाई।
कोई भेजे रामायण- गीता का ज्ञान,
कोई बोले, "बंद करो ये अज्ञान!"

मीम भी आए, जोक्स भी छाए,
आंटी ने सबको फॉरवर्ड कर डाले!
चाचा बोले, "फेक न्यूज़ मत भेजो!"
एडमिन बोला, "अब सब ठंड रखो!"

पॉलिटिक्स पर छिड़ गई जंग,
दो ने छोड़ा ग्रुप, बोले हो गए "तंग!"
कोई फिल्म की बहस में भिड़ गया,
कोई खाने की रेसिपी से उब गया!

शाम को एडमिन ने धैर्य गंवाया,
बोला, "अब इस ग्रुप को भुलाया!"
लेकिन तभी आया एक नया मोड़,
"नमस्ते दोस्तों, मुझे भी तो जोड़!"

ह्वाट्सएप ग्रुप का हाल निराला,
सभी को इसने किया मतवाला !
सुबह -सुबह "गुड मॉर्निंग" लाता,
मजेदार जोक्स से हमें गुद-गुदाता !